झारखण्ड की राष्ट्रीय स्मारिका

राष्ट्रीय श्रम दिवस-भगवान विश्वकर्मा जयन्ती विशेषांक-2004

स्वर्ण जयन्ती वर्ष-2005

श्रम साधना

भगवान विश्वकर्मा

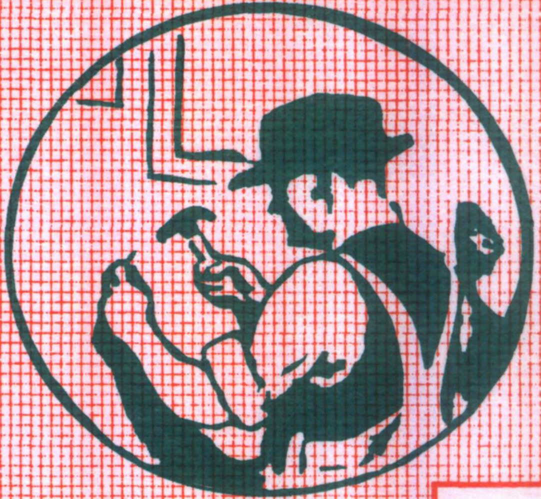

भगवान बिरसा

2004

भारतीय मजदूर संघ, झारखण्ड प्रदेश

प्रान्तीय कार्यालय

CD 206/ सेक्टर III, राँची - धुर्वा

हमारे मार्गदर्शक...... प्रेरणाश्रोत...... जो अब हमारे बीच नहीं रहे !

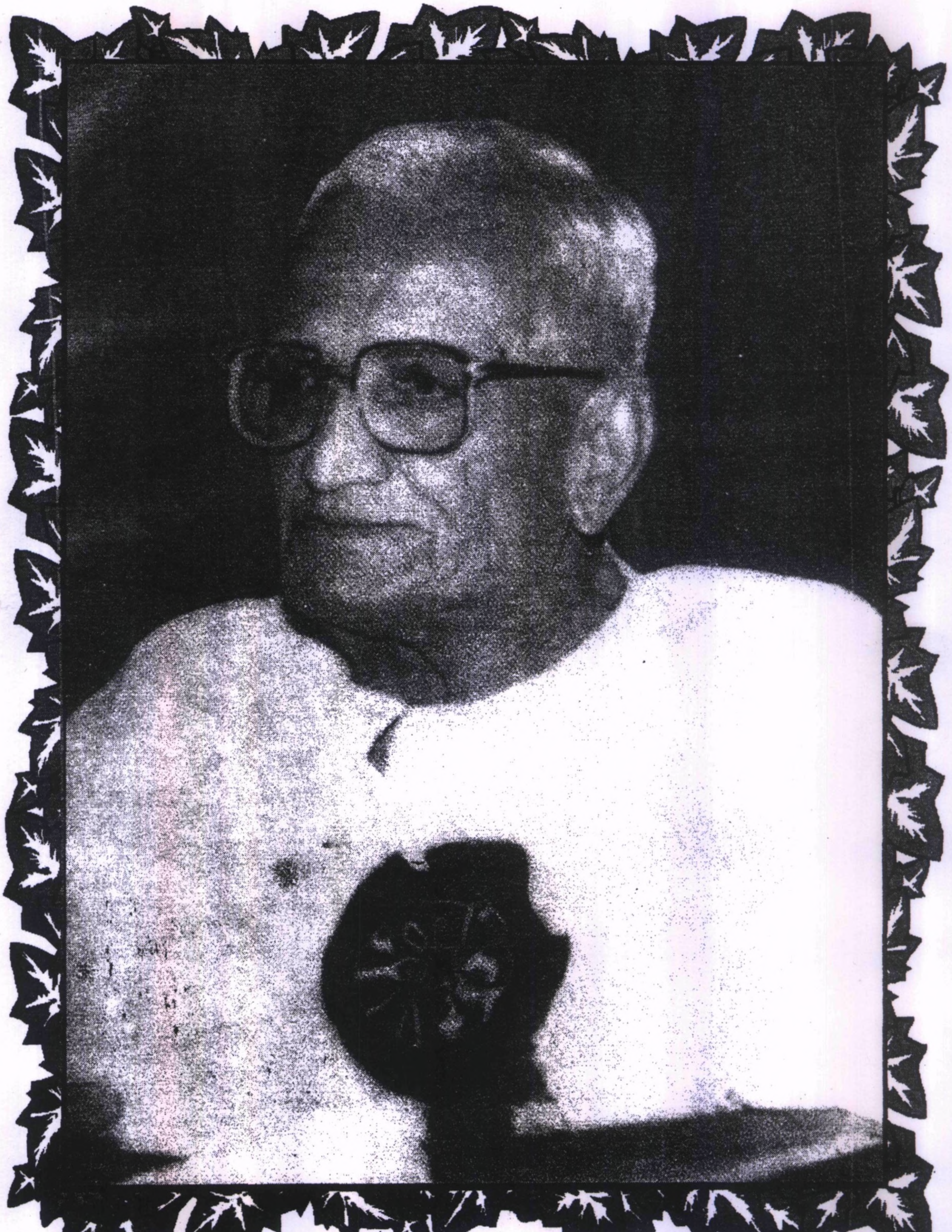

(जन्म 10 नवम्बर 1920, देहान्त 14 अक्टूबर 2004)

श्रम साधना

भगवान विश्वकर्मा जयन्ती विशेषांक

परामर्शदाता

श्री रामप्रकाश मिश्र, डा० बसंत कुमार राय, श्री महादेव सिंह, श्री बासुकीनाथ झा, **श्री राजकुमार भक्त**, श्री निर्मल कुमार सिंह, श्री सीताराम सिंह, श्री प्रदीप कुमार पाण्डे, श्री रामनरेश कुमार, श्री आर० एस० चौधरी

****

विशेष सहयोग

श्री रामसागर शर्मा, श्री जे० पी० मिश्रा, श्री आर० ए० प्रसाद, श्री संजय चक्रवर्ती (रांची), **श्री संजय** कुमार (उर्जानगर), श्री रणधीर सिंह (चितरा), श्री ओमप्रकाश महतो (तीनपहार), श्री रणजीत कुमार (आदित्यपुर)

****

सम्पादक मण्डल

श्री रघुवंश नारायण सिंह – विज्ञापन विभाग

श्री पारसनाथ ओझा – प्रकाशन विभाग

****

प्रकाशक

श्री आदित्य साहू, महामंत्री, भारतीय मजदूर संघ, झारखण्ड प्रदेश

कार्यालय : सी डी–206, सेक्टर–।।।, धुर्वा, जिला–रांची–834004

दूरभाषः 0651–2409876 (का0), 06553–254790 (ऑ0)

****

मुद्रक

युनाइटेड प्रिन्टर्स

गोला रोड (सिन्हा मार्केट), रामगढ़ कैन्ट (हजारीबाग), दूरभाषः 06553–224634

महामंत्री की कलम से............

भगवान विश्वकर्मा जयंती 'राष्ट्रीय श्रम दिवस' के अवसर पर हम भारतीय मजदूर संघ झारखण्ड प्रांत की ओर से श्रमिक स्मारिका 'श्रम साधना' का प्रकाशन कर रहे हैं झारखण्ड प्रदेश भगवान बिरसा सिद्धो कान्हो, बुधु बीर, ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव, शेख भिखारी, परमवीर चक्र विजेता अलबर्ट एक्का जैसे महान हुतात्माओं की जन्मभूमि एवं कर्मभूमि रही है वहीं यह प्रदेश माँ छिन्नमस्तिका, बाबा धाम देवघर के नाम से विख्यात रावणेश्वर ज्योर्तिलिंग, बासुकीनाथ धाम, रांची का स्वामी जगरनाथ मंदिर, पहाडीबाबा, रामरेखा धाम, हनुमान जी की जन्म स्थली अंजनीग्राम जैसे महान धार्मिक स्थलों से विख्यात है अपनी प्राकृतिक छटा के लिए बेनीसागर, नेतरहाट, पंचघाघ, हुण्डरू झरणा, दशम फॉल, हिरनी झरना, घाटशिला जैसे प्रकृतिक स्थल जाने जाते है। कुल 22 जिलों में कार्यरत प्रांत विभिन्न लोक भाषाओं तथा लोक नृत्यों के लिए देश ही नहीं विदेशों तक जाना जाता है। अपनी सांस्कृतिक विरासत के साथ यह प्रदेश अकुत खनिज सम्पदा से पूर्ण है जिसमें कोयला, ताम्बा, लोहा, लाईम स्टोन, बॉक्साईट, यूरेनियम, सोना, चांदी, चाहना क्ले, ग्रेफाईट मैग्नेटाईट तथा अभ्रक प्रमुख खनिज हैं वही वनोत्पादों, वनौषधियों से भी सम्पूर्ण प्रांत है भारतीय मजदूर संघ यहां के सभी क्षेत्रों के श्रमिकों के बीच कार्यरत है और इसके साथ ही असंगठीत क्षेत्र जिसमें बीड़ी उद्योग, निर्माण मजदूर, खेतिहर मजदूर, रिक्सा ठेला, ऑटो चालक सभी क्षेत्र के मजदूरों ने भारतीय मजदरू संघ का दामन पकड़ रखा है ।

वर्ष 2005 जोकि भारतीय मजदूर संघ का स्वर्ण जयंति वर्ष है तथा वर्ष 2006 गुरू जी शताब्दी वर्ष में हम राष्ट्रहित उद्योग हित को ध्यान में रखते हुए राष्ट्र को परम वैभव के शिखर पर ले जाने की दृढ़ संकल्पना के साथ यह स्मारिका हमारे प्रेरणा श्रोत जो अब हमारे बीच नहीं रहे परम पूजनीय दत्तोपंत जी ठेंगडी के श्रीचरणों में समर्पित करता हूँ यह हमारे कार्यकर्ताओं के मार्ग दर्शन तथा संगठन की सही तश्वीर पेश करने में सफल होगी इन्हीं कामनाओं के साथ ।

।। भारत माता की जय ।।

आदित्य साहू
(महामंत्री)

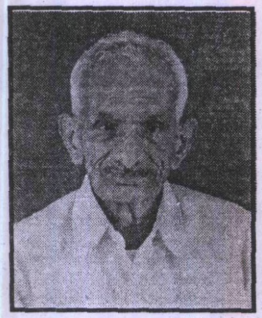

स्व० श्रद्धेय राजकृष्ण जी भक्त

संक्षिप्त जीवन परिचय

(1921 – 2004)

श्रद्धांजलि

नव दधीचि तुमहें शत्-शत् प्रणाम्

भारत विभाजन के पूर्व पंजाब के मिन्टगुमरी जिला के 'कबूला' ग्राम में प्रणामी मत में गहरी आस्था रखने वाले एक साधारण परिवार में 1921 में जन्में 83 वर्षीय श्री राजकृष्ण भक्त, दो पुत्र एवं तीन पुत्रियों के भरे पूरे परिवार को छोड़ हम सभी से विदा हो गए ।

प्रारंभ के सफल अध्यापक एवं अखाड़े के शौकीन आप रहे । बैंक सेवा के दौरान पदोन्नति के अनेक प्रस्तावों को कर्मचारी हित-रक्षा के उद्देश्य से आप नकारते रहे और वर्ष 1979 में सेवा-निवृत्ति आयु से पूर्व ही संघ अधिकारियों के आदेशानुसार साधारण लिपिक के पद पर रहते आप सेवा मुक्त हो गए । रा० स्व० संघ के समर्पित निष्ठावान स्वयंसेवक के नाते करनी तथा कथनी समान रखने वाले भक्त जी ने संघ एवं बाद में भ० म० संघ के अनेक जोखम भरे दायित्वों का सफल निर्वहन किया । फिर चाहें वह अवसर संघ पर प्रतिबंध के समय कारागार के अन्दर जाकर दायित्व निभाने का हो या बहार भूमिगत रहकर मार्गदर्शन करने का अथवा श्रमिक क्षेत्र में लंबे काल तक आमरण अनशन पर बैठने से लेकर क्रमांक-1 के प्रतिष्ठावान श्रम संघ के अध्यक्ष व महामंत्री के चुनौतीपूर्ण दायित्वों को वर्षों-2 तक निभाने तक का रहा हो ।

जो भी व्यक्ति भक्त जी से एक बार मिला वह इनकी सादगी सच्चाई के प्रति स्पष्टवादिता एवं कर्मचारी हित में बड़े से बड़े नौकरशाह से भी भिड़ने की हिम्मत का प्रशंसक बने बिना नहीं रह सका । भक्त जी के व्यवहार में शालीनता जीवन पर्यत रही । उपेक्षित मजदूर क्षेत्र में दुबला पतला साधारण सा दिखने वाला व्यक्ति भी अजात-शत्रु बन सकता है-यह कल्पनातीत है किन्तु 'मैं' नही 'तू ही' के आदर्श रा० स्व० संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरूजी एवं भमसं के प्रेरणाश्रोत श्री दत्तोपंत ठेंगडी से उत्सफुरित श्री भक्त जी पथिक बनते-बनते स्व्यं पथ ही बन गए, तथा निज देह को भी शोध कार्य हेतु **'दधीच देह दान समिति'** को देने का संकल्प-पत्र भर गए ।

संपूर्ण संघ-सृष्टि का श्री भक्त जी को शत-शत नमन ।

भारतीय मजदूर संघ
झारखण्ड प्रदेश

हमारा राष्ट्रीय श्रम दिवस

विश्वकर्मा जयन्ती

(कन्या संक्रान्ति १७ सितम्बर)

देवताओ के कल्याण एवं उनकी रक्षा करने के लिए अपने ही एकमात्र पुत्र वृत्त के वध हेतु महर्षि दधीचि की अस्थियों से इन्द्र के लिए वज्र बनाते हुए आदिशिल्पी विश्वकर्मा

हमारे मार्गदर्शक...... प्रेरणाश्रोत...... जो अब हमारे बीच नहीं रहे !

(जन्म 10 नवम्बर 1920, देहान्त 14 अक्टूबर 2004)

भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक

श्रद्धेय दत्तोपंत जी ठेंगड़ी

मान्यवर दत्तोर्पत ठेंगडी जी का जन्म दीपावली के शुभ पावन पर्व पर 10 नवम्बर, 1920 को महाराष्ट्र में विदर्भ प्रान्त के आर्वी गाँव में हुआ था । उनके पिता स्वर्गीय श्री बापू राव दाजी ठेंगड़ी वर्धा जिले के प्रसिद्ध वकील थे जिन्होंने अपने परिश्रम के बलबूते पर समाज में प्रतिष्ठा एवं धन अर्जित किया था । स्वतंत्रता एवं देशप्रेम बचपन से ही दत्तोपंत जी के रक्त में संचार करता रहा है । बचपन में गठित वानर सेना के अध्यक्ष के रूप में वह सक्रिय रहे और कालेज जीवन में श्री ठेंगड़ी जी सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी के नेता माने जाते थे । अपने मितभाषी मृदु स्वभाव के पुत्र को उनके पिता जी पढ़ा–लिखाकर अपने समान वकील बनाना चाहते थे । लेकिन ठेंगड़ी जी को छल-प्रपंच से भरे संसार के वंचक मार्ग आकर्षित नहीं कर सके । अतः भोगवादी जीवनधारा से परामुख होकर उन्होंने संघ के प्रचारक के रूप में अपना तनमन, विद्या–बुद्धि सभी कुछ भारतमाता की सेवा में अर्पित कर दिया । श्री ठेंगड़ी जी 1941 में वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के जीवनव्रती प्रचारक के रूप में कार्य का विस्तार करने के लिए घर का मोह छोड़कर निकल पड़े ।

मान्यवर ठेंगड़ी जी 1942 से 44 तक केरल प्रान्त, 1945 से 47 तक कलकत्ता क्षेत्र तथा 1948 से 49 तक बंगाल एवं आसाम प्रान्त में संघ के प्रचारक के रूप में कार्य करते रहे हैं । वे 1949 से 54 तक हिन्दुस्तान समाचार समिति के संगठन मंत्री रहे हैं । कालीकट में केरल प्रान्त के राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के 1942 में सम्पन्न हुए, प्रान्तीय अधिवेशन में वह प्रधान रहे और भारतीय बुद्ध महासभा के सहयोगी सदस्य हैं । श्री ठेंगड़ी जी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के संस्थापक सदस्य रहे और 1950 में विदर्भ प्रान्त विद्यार्थी परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष भी रहे । भारतीय जनसंघ में 1951 से 1954 तक प्रादेशिक संगठन मंत्री मध्य प्रदेश एवं 1955 में जनसंघ के अध्यक्ष पण्डित मौलीचन्द्र जी डेगरा के निजी सचिव तथा 1956 से 57 तक दक्षिण भारत के क्षेत्रीय संगठन मंत्री के रूप में कार्य किये।

वे सन् 1949 से 51 तक आई0 एन0 टी0 यू0 सी0 में 10 उद्योगों से सम्बन्धित यूनियनों के पदाधिकारी रहे और अक्टूबर 1950 में इंटक की अखिल भारतीय जनरल कौन्सिल के सदस्य चुने

गये जो पुराना मध्य प्रदेश है उसके 1950–51 के कार्यकाल में प्रादेशिक संगठन मंत्री मनोनीत किये गये थे । मान्यवर ठेंगड़ी जी ने 1952–55 में ऑल इण्डिया बैंक एसोसियेशन में काम किया और इससे सम्बन्धित कुछ यूनियनों के पुराने मध्य प्रदेश के मंत्री भी रहे । विविधताओं से भरे अनेक दायित्वों का निर्वहन करते हुए 1954–55 में ऑल इण्डिया आर0 एम0 एस0 इम्पलाईज यूनियन तृतीय श्रेणी के सेन्ट्रल के अध्यक्ष, रिटायर्ड रेलवेमेन्स फेडरेशन से प्रथम संरक्षक, ऑल इण्डिया रेलवे स्टेनोग्राफर एसोसिएशन के संरक्षक, इण्डियन एकेडमी ऑफ लेबर आर्बिट्रेटर्स के सहयोगी सदस्य, ऑल इण्डिया रेलवे टेलीग्राफ स्टाफ कौंसिल के सदस्य, लोको मैकेनिकल आर्टीजन स्टाफ ऐसोसिएशन ईस्टर्न रेलवे के संरक्षक, टैक्सटायल टैक्नीशियन्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के आजीवन सदस्य और फैडरेशन ऑफ आल इण्डिया पेंशनर्स एसोसिएशन के संरक्षक रहे । सन् 1959 में उन्होंने ऑल इण्डिया इंश्योरेन्स कारपोरेशन फील्ड वर्कर्स एसोसिएशन के अखिल भारतीय अधिवेशन का सभापतित्व भी किया था । सन् 1954 में 55 तक मध्य प्रदेश टेनेन्ट्स एसोसिएशन के संगठन मंत्री औन सन् 1953 से 56 तक डॉ0 अम्बेडकर जयन्ती उत्सव समिति, नागपुर के सदस्य, शेड्यूल्ड कास्ट रिक्शा पुलर्स कोआपरेटिव ट्रान्सपोर्ट सोसायटी लिमिटेड दिल्ली के सहायक, ऑल इण्डिया ट्रेवलर्स एण्ड ट्रान्सपोर्ट रिलीफ एसोसिएशन के आजीवन सदस्य, सन् 1956 तक साकोली तालुका शेतकारी (कृषक) परिषद् के सभापति, सन् 1953 से 55 तक मध्य प्रदेश हैण्डलूम वीवर्स कांग्रेस के सलाहकार, सन् 1953 से 55 तक विदर्भ बुनकर कामगार संघ के सलाहकार, सन् 1953 से 54 तक छुई खदान गोलीकाण्ड पीड़ित सहायता समिति के मंत्री, छत्तीसगढ़ मर्ज स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेन्स की कार्यकारिणी के सदस्य, सन् 1952 में नागपुर नगर महापालिका संयुक्त नागरिक मोर्चा के संयोजक एवं जिला परिषद् कानपुर के सदस्य रह चुके हैं ।

मान्यवर ठेंगड़ी जी मार्च 1964 से उत्तर प्रदेश से राज्यसभा के सदस्य के रूप में दो बार चुने गये हैं । विश्व के विभिन्न देशों की यात्रा करके श्री ठेंगड़ी जी ने विश्व के मानव मन का सूक्ष्म अध्ययन भी किया है । विभाजन के तुरन्त पश्चात् पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) में उनका प्रवास कार्यक्रम हुआ था । अपने संसदीय कार्यकाल की अवधि के दौरान श्री ठेंगड़ी जी को विदेशों के मजदूर आन्दोलनों का अध्ययन करने का सुअवसर मिला है । सन् 1968 की सोवियत संघ एवं हंगरी यात्रा इस दृष्टि से महत्वपूर्ण रही है । सन् 1977 में जिनेवा में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन में उनको भारत का प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिला । यूगोस्लाव ट्रेड यूनियन के निमंत्रण पर वहाँ के श्रमिकीकरण प्रयोग के अध्ययन हेतु यूगोस्लविया और 1979 में अमरीका सरकार के निमंत्रण

पर वहाँ के ट्रेड यूनियन आन्दोलन का अध्ययन करने के लिए अमेरिका की यात्रा, कनाडा और ब्रिटेन का प्रवास एवं अप्रैल 1985 में चीन के मजदूर संगठन ऑल चायना फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन (ए० सी० एफ० टी० यू०) के निमंत्रण पर भारतीय मजदूर संघ के प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व श्री ठेंगड़ी जी ने किया था और उस समय 28 अप्रैल, 1985 को चीन ने अपनी बीजिंग (पीकिंग) रेडियो से उनका संदेश भी प्रसारित कराया था । 1985 में ही जकार्ता में सम्पनन आई० एल० ओ० की दसवीं रीजनल कान्फ्रेन्स हेतु इण्डोनेशिया की यात्रा के अतिरिक्त उन्होंने बर्मा, थाइलैण्ड, मलेशिया, सिंगापुर, मिस्त्र, केनिया, युगाण्डा तथा तन्जानिया का भी भ्रमण किया है ।

23 जुलाई, 1955 को वह भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक, [illegible] एवं [illegible] के रूप में विश्व के श्रम संगठनों के गगन पर सूर्य की तरह उदित हुए । वे भारतीय मजदूर संघ की आत्मा हैं । भारतीय मजदूर संघ के अलावा सामाजिक समरसता मंच, भारतीय किसान संघ और ग्राहक पंचायत के जन्मदाता भी वही हैं । स्वेदेशी जागरण मंच और [illegible] समादर मंच, पर्यावरण मंच आदि ऐसी अनेक और भी संस्थाएं हैं जो मान्यवर ठेंगड़ी जी की छत्रछाया एवं मार्गदर्शन में जन्मी, पली और बड़ी हुई हैं ।

भारतीय इतिहास, दर्शन, अर्थनीति, समाजनीति, राजनीति आदि अनेक [illegible] तथा संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, बंगाली तथा मलयालम भाषाओं पर पूरा अधिकार रखने वाले अत्यन्त सादा व सरल मृदुभाषी मजदूर नेता श्रद्धेय दत्तोपंत ठेंगड़ी जी का पूरे भारतवर्ष में सभी लोग अत्याधिक श्रद्धा व सम्मान करते हैं । श्री ठेंगड़ी जी के अविश्रान्त [illegible]निष्ठ जीवन से [illegible] लेकर देश के हर एक कोने से राष्ट्रभक्ति से उद्वेलित मजदूरों का विशाल कारवाँ भारतीय मजदूर संघ के भगवा ध्वज को नीलगगन में फहराते हुए द्रुतगति से बढ़ता ही जा रहा है । मान्यवर ठेंगड़ी जी के विनम्र व्यक्तित्व, संगठन–कुशलता, कुशाग्र एवं मेधावी प्रतिभा–चिन्तन और मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से भारतीय मजदूर संघ दिन रात चौगुने अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा है ।

विदेश–यात्रा हो, सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे कार्य हों, [illegible] भाषण हो, स्व० ठेंगड़ी जी के विचार और कार्य की आधारभूमि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ [illegible] ध्येय एवं कार्य ही हैं । सार्वजनिक जागरण के अनेक क्षेत्रों में [illegible] मूल प्रेरणा [illegible] राष्ट्रीय स्वयं–सेवक संघ एवं परमपूज्य श्री गुरू जी का निकट का [illegible] है । [illegible] वर्त्तमान और भविष्य की ओर देखने का श्री ठेंगड़ी जी का दृष्टिकोण [illegible] सार्वभौम, [illegible]

वैभवशाली हिन्दू राष्ट्र की संकल्पना को तर्कशुद्ध और इतिहास–शुद्ध सक्षम आधार प्रदान करती है। रहन–सहन की सर्वमान्य सरलता, ध्येयवादी, राष्ट्र–समर्पित तपस्वी जीवन, तत्वचिंतन की गहराई, लक्ष्य की स्पष्टता, ध्येय–साधना में सातत्य और कार्य की सफलता में अडिग विश्वास के धनी, कुशल संगठक श्री ठेंगड़ी जी की दिनचर्या अति व्यस्त रहते हुए भी उन्होंने समय–समय पर अत्यन्त उपयोगी लेखन कार्य किये । वे सिद्वहस्त लेखक थे । विभिन्न विषयों पर उनके विचार पुस्तकों के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं । समाज के कमजोर वर्ग और पीड़ित, शोषित श्रमजीवियों की आर्थिक दशा में सुधार लाने के लिए उन्होंने केवल विचार ही नहीं दिये वरन् देश में अन्याय, अत्याचार, विषमता और दीनता से जूझने के लिए कर्मठ व लगनशील कार्यकर्ताओं का निर्माण करने में भी वे सफल हुए ।

श्री ठेंगड़ी जी के जुलाई–अगस्त 1997 के विदेश प्रवास क्रम में जी–15 देशों के सम्मेलन के समानान्तर चलने वाला 'वैकल्पिक आर्थिक शिखर सम्मेलन', जिसमें अनेक देशों के 1,000 से भी अधिक अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री तथा सामाजिक कार्यकर्ता सम्मिलित हुए, 'गांधीवादी अर्थात् स्वदेशी अर्थशास्त्र विषय पर उन्होंने उद्‌बोधन किया, त्रिनिदाद तथा गुयाना के राष्ट्राध्यक्ष व प्रधानमंत्री से भेंट की और श्रमिक संगठनों के पदाधिकारियों तथा अन्य सक्रिय कार्यकर्ताओं से वार्ताएं कीं ।

श्रद्धेय ठेंगड़ी जी के प्रयास से समूचे देश में विश्वकर्मा जयन्ती को राष्ट्रीय श्रम दिवस के रूप में सभी स्वीकार करने लगे हैं और देश के मजदूर–जगत् में स्वदेश–भक्ति एवं भारतीयता की अलख जग गई है और "भारतमाता की जय" के नारे भी गूंजने लगे हैं । काम और आराम यह मजदूरों का मौलिक अधिकार है, पैसे और पसीने की बराबर की साझेदारी है अतएव मजदूर भी अपने–अपने उद्योगों का मालिक है, उद्योगों के राष्ट्रीयकरण की जगह श्रमिकीकरण होना चाहिए – जैसे सूत्र–बिन्दु भारत के मजदूर–जगत् के मानस में उनके द्वारा ओजस्वी एवं भावपूर्ण प्रभावी ढंग से भरे गये हैं । राष्ट्र का औद्योगीकरण, उद्योगों का श्रमिकीकरण और श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण यह त्रिसूत्र मान्यवर ठेंगड़ी जी का ही दिया हुआ है । गरीबी और बेकारी से मुक्ति पाने के लिए पूँजीप्रधान नहीं तो श्रमप्रधान अर्थ–रचना हमारे देश की जनता की मौलिक आवश्यकता है । दिनांक 10 अक्टूबर 2004 को काल ने उन्हें हम से छीन लिया है लेकिन उनका मार्गदर्शन और प्रेरणा हमे अपने पथ की ओर अग्रसर होने में हम भारतीय मजदूर संघ कार्यकर्ताओं को ऊर्जा प्रदान करते रहेंगे और राष्ट्र और समाज के प्रति समर्पित होकर हम काम करेंगे यही सभी कार्यकर्ताओं के लिए उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी ।

हमारे श्रमिक गीत

गीत

संगठन गढ़े चलो, सुपंथ पर बढ़े चलो,
भला हो जिसमें देश का, वो काम सब किये चलो।
युग के साथ मिल के सब कदम बढ़ाना सीख लो,
एकता के स्वर में गीत गुनगुनाना सीख लो–2
भूल कर भी मुख में जाति पंथ की न बात हो,
भाषा प्रान्त के लिए कभी न रक्तपात हो,
फूट का भरा घड़ा है फोड़ कर बढ़े चलो,
भला हो जिसमें देश का ....
आ रही है आज चारों ओर से यही पुकार,
हम करेंगे त्याग मातृ भूमि के लिए अपार–2
कष्ट जो मिलेंगे मुस्करा के सब सहेंगे हम,
देश के लिए सदा जिएंगे और मरेंगे हम,
देश का ही भाग्य अपना भाग्य है ये सोच लो
भला हो जिसमें देश का ....

गीत–भगवा ध्वज

सदियों से लहराता आया, भगवा अमर निशान है ।
त्याग, तपस्या बलिदानों का, बिन्दु अमर महान है ।।
हो गये वे बलिदान साथ जो, इसको लेकर हाथ चले ।
मोह माया से तोड़ के नाता मानव का कल्याण करे ।।
अपने हित का लोभ नहीं है, सब हित एक समान हैं ।
त्याग तपस्या बलिदानों का, बिन्दु अमर महान है ।।
देंगे जान न जाने देंगे, भगवे के सम्मान को ।
विश्व में ऊंचा पुनः करेंगे, भारत मां के नाम को ।।
इसकी लहर में पवन मचलती, चलते अपने प्राण हैं ।
त्याग तपस्या बलिदानों का, बिन्दु अमर महान है ।।
पहन के चोला चले बसन्ती, पागल से मतवालों का ।
इसी माटी के लिये जिसे हम, उत्तर सभी सवालों का ।।
भौतिक सुख से तड़पते हैं जो, सबका यही निदान है ।
त्याग तपस्या बलिदानों का, बिन्दु अमर महान है ।।

गीत

आओ मिल कर करें प्रतिज्ञा, भारत के सम्मान की ।
फिर से वैभव हो दुनिया में, जय हो हिन्दुस्तान की ।।
हम भारत के भाग्य अपना, भारत की सन्तानें हम ।
इस पर सब कुछ अर्पण कर दें, अपना जीवन तन मन धन।।
नहीं है कोई इससे ज्यादा, कीमत अब संसार की ।।
फिर से वैभव हो दुनिया में, जय हो हिन्दुस्तान की ।।
एक बार क्या बार–बार हम, अपन जीवन [illegible] ।
भारत मां की बलि–वेदी पर, अपना शीश उतारें ।
छोड़ के सब कुछ आज लगा दें, बाजी अपने प्राण की।।
फिर से वैभव हो दुनिया में, जय हो हिन्दुस्तान की ।।
निर्माणों की दौड़ में हम सब, अपना मूल नहीं भूलें ।
जीवन में निस्वार्थ रहें हम, असमंजस में न झूलें ।
आज नहीं वह, अब करनी है प्रक्रिया निर्माण की ।।
फिर से वैभव हो दुनिया में, जय हो हिन्दुस्तान की ।।
एक मंत्र का जाप करें हम, संधे शक्ति [illegible] ।
मिल कर बोलें एक साथ सब, भारत की जय [illegible] ।।
आंख मूंद कर नहीं सहेंगे, हालत अब अपमान की ।
फिर से वैभव हो दुनिया में जय हो हिन्दुस्तान की ।।

मानवता के लिये

मानवता के लिए उषा की किरण जगाने वाले हम ।
शोषित पीड़ित, दलित जनों का भाग्य बनाने वाले हम ।।
हम अपने श्रम सीकर से ऊपर में स्वर्ण उगा देंगे ।
कंकड पत्थर समतल कर कांटों में फूल खिला देंगे ।
सतत परिश्रम से अपने हैं वैभव लाने वाले हम ।
शोषित, पीड़ित दलित जनों का भाग्य बनाने वाले हम ।।
अन्य किसी के मुंह की रोटी हरना अपना काम नहीं ।
पर अपने अधिकार गंवा कर, कर सकते आराम नहीं ।
अपने हित औरों के हित का मेल मिलाने वाले हम ।
शोषित, पीड़ित दलित जनों का भाग्य बनाने वाले हम ।।
रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा आवश्यकता जीवन की ।
व्यक्ति और परिवार सुखी हों तभी मुक्ति होती सच्ची ।
हँसते–हँसते राष्ट्र कार्य में शक्ति लगाने वाले हम ।
शोषित, पीड़ित, दलित जनों का भाग्य बनाने वाले हम ।।
भारत माता का सुख गौरव प्राणों से भी प्यारा है ।
युग–युग से मानव हित करना शाश्वत धर्म हमारा है ।
जीवन शक्ति उसी माता को भेंट चढ़ाने वाले हम ।
शोषित, पीड़ित, दलित जनों का भाग्य बनाने वाले हम ।।

चन्दन है इस देश की माटी

चन्दन है इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम है ।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा–बच्चा राम है ।
हर शरीर मन्दिर सा पावन, हर मानव उपकारी है ।
जहां सिंह बन गये खिलौने, गाय जहां मां प्यारी है ।
जहां सवेरा शंख बजाता, लोरी गती शाम है ।
चन्दन है इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम है ।
जहां कर्म से भाग्य बदलते, श्रम निष्ठा कल्याणी है,
त्याग और तप की गाथायें, गाती कवि की वाणी है,
ज्ञान यहां का गंगा जल सा, निर्मल है, अविराम है ।।2।।
चन्दन है इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम है।
इसके सैनिक समरभूमि में, गाया करते गीता है,
इसके खेत में हल के नीचे, खेला करती सीता है,
जीवन का आदर्श यहां पर, परमेश्वर का धाम है ।।3।।
चन्दन है इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम है ।

झंडा अपने देश का

झंडा अपने देश का, श्रमिकों का मजदूरों का ।
भगवा ध्वज अपनाया है तो मोह कहां इन प्राणों का ।।ध्रुव।।
नील गगन में भगवा ध्वज यह सदियों से लहराता है ।
अंधियारे को दूर भगाता, जीवन ज्योति जगाता है ।
जन मानस में त्याग तपस्या भाव जगे बलिदानों का ।। 1 ।।
औद्योगिक क्रान्ति प्रतीक यह चक्र सुदर्शन समान है ।
गेहूं की बाली हर किसान का समृद्धि वरदान है ।
मुठ्ठी में सामर्थ्य अंगूठा प्रतीक यह अरमानों का ।। 2 ।।
औद्योगिकरण भारत का हो, उद्योगों का श्रमिकीकरण ।
श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण हो राष्ट्र का औद्योगीकरण ।
बढ़ते जायें सदा चरण, कारवां चले दीवानों का ।। 3 ।।

श्रमिक गीत

अब भारत के मजदूरों का, भगवा ध्वज लहरायेगा ।
हर श्रमिक जब राष्ट्र भक्ति की ज्वाला में तप जाएगा ।
चक्र मुठ्ठी गेंहू के बाली के संग जब [illegible] ।
तब देखो भारत में फिर से राम राज्य आ जाएगा ।। 1 ।।
स्वतंत्र भारत की स्वतंत्र ही अर्थनीति बन जाएगी ।
श्रम नीति भी स्वतंत्र होगी तब समृद्धि आएगी ।
श्रमधन और उत्पादन को जब पूर्ण न्याय मिल जाएगा ।
तब देखो भारत में फिर से राम–राज्य आ जाएगा ।। 2 ।।
जो श्रम का अपमान करेगा उसका वह फल पाएगा ।
राष्ट्रभक्ति की कसौटियों पर उसको परखा जाएगा ।
संगठित हो कर श्रमिक जब चमत्कार दिखलाएगा ।
तब देखो भारत में फिर से राम राज्य आ जाएगा ।। 3 ।।
किसान अपना भाग्य लिखेगा अपने हल की नोकों से ।
मजदूर का सम्मान बढ़ेगा बहते हुए पसीने से ।
हम हैं अपने भाग्य विधाता जन गण मन जब गाएग ।
तब देखो भारत में फिर से राम राज्य आ जाएगा ।। 4 ।।
भगवे ध्वज की त्याग–तपस्या बलिदानों की परम्परा ।
पुरखों ने भी अपने खून से है इतिहास [illegible] ।
भारत माता की जय [illegible] नारा [illegible] ।
तब देखो भारत में फिर से राम राज्य आ जाएगा ।। 5 ।।
।। भारत माता की जय ।।

भारतीय मजदूर संघ, झारखण्ड प्रदेश

कार्य समिति की सूची

क्र.स.	पदनाम	पदाधिकारी का नाम	पत्राचार का पता
1.	अध्यक्ष	श्री महादेव सिंह	क्वा0 न0 सी/9, अंगारपतरा कोलियरी पेट्रोल पम्प के पास पो0 कतरासगढ जि0 धनबाद फोन–0326–2373254.
2.	उपाध्यक्ष	श्री आर. एस. चौधरी	क्वा0 न0 2–142, से0–2 बी, बोकारो स्टील फोन–06542–246741.
3.	उपाध्यक्ष	श्री रामनरेश कुमार	यू. सी. आई. एल. कालोनी, टी. 229/28, जादूगोडा माईन्स, जि0 पूर्वी सिंहभूम–832102. फोन 0657–2730927
4.	उपाध्यक्ष	श्री प्रदीप कुमार पाण्डे	बी.एम.एस. भवन, बाबा पथ हजारीबाग. फोन–06546 – 223596,
5	उपाध्यक्ष	श्री राम प्रवेश शर्मा	शेखर जैन विल्डिंग, जैन मन्दिर के निकट, गोल पहाडी के निकट, टाटा नगर, पिन–831002. फोन–2494747, 2994837.
6.	महामंत्री	श्री आदित्य साहू	क्वा0 न0 1सी, 44/2 नयानगर बरकाकाना, जि0–हजारीबाग–829103 फोन–06553–254290. मो.–9835107084
7.	मंत्री	श्री हरिशंकर सिंह	सी. एम. पी. एफ. कालोनी, धनबाद [illegible]–2210369
8.	मंत्री	श्री कृष्णा नंद देव	ग्राम–पो0–गमहरिया, जमशेदपुर, पूर्वी सिंहभूम फोन–0657–2386484, मो–9431302??
9.	मंत्री	श्री राम सागर शर्मा	क्वा0 न0 सी. डी. 287 से0–3, धुर्वा, रांची, फोन–0651–2405908
10.	मंत्री	श्रीमति बालोमणी बाखला	इंडियन आल्मुनियम कम्पनी, पो0–बगरू माईन्स, जि0–लोहरदगा । 06526–224161
11.	संगठन मंत्री	श्री रघुवंश नारायण सिंह	क्वा0 न0–बी/23, पो0–[illegible], जि0–रांची–[illegible]210 फोन–06531–235738, [illegible]240 (PP)
12.	कोषाध्यक्ष	श्री चन्द्रशेखर चौधरी	ग्राम–पो0–साण्डी, चितरपुर, जि0–[illegible] फोन–06553–251505

कार्यकारिणी सदस्य

13.	श्री मुबारक हुसैन	सालानपुर कोलियरी, पो0–कतरास, जि0–धनबाद फोन–0326–2373778
14.	श्री सिकुर सुम्बरई	म0 न0–64/1, ए–टाईप, मेघाहातु, मेघाहातु बुरू, जि0–पश्चिम सिंहभूम–833223, फोन न0–06596–244997.

15.	श्री जंगबहादुर चौधरी	न्यू अप्रैन्टिस हॉस्टल, पतरातु, जि0—हजारीबाग । फोन—06553—287124
16.	श्री अरविंद कुमार सिंह	बिहार राज्य पथ परिवहन निगम, हजारीबाग । फोन—06546—263181
17	श्री पी. वी. वेंकटरमन	श्री एस. डी. सिंह का म0—नई बी. यू. 12—डीविजन, मनईटांड, जि0—धनबाद ।
18.	श्री राजेश कुमार जयसवाल	नोडेल अधिकारी, प्रधान कार्यालय, पलामू क्षेत्रिय ग्रामीण बैंक, डाल्टेनगंज, फोन—06562—222018 कार्यालय ।
19.	श्री आर. के. श्रीवास्तव	बी. 308, से0—2, धूर्वा राँची, फोन—0651—2441073.
20.	श्री जे. पी. मिश्रा	सी. डी. 206, से0—3, धूर्वा राँची—834004, फोन—0651—2406185
21.	श्री रामचन्द्र गोप	बिहार मिनरल मजदूर संघ, अपर बाजार लोहरदगा, फोन—06526—222567, 224615.
22.	श्री बिनोद कुमार सिन्हा	बोकारो थर्मल, जि0—बोकारो
23.	श्री वाई. एन. शुक्ला	जमशेदपुर, रेलवे ।
24.	श्री रणजीत कुमार	ब्लॉक नं0—210/2/3, रोड नं0—12, आदित्यपुर, जमशेदपुर, फोन—0657—2[illegible]0612.
25.	श्री राज कुमार जयसवाल	उर्जा नगर, महागामा, जि0—गोड्डा ।
26.	श्री प्रबोध सोरेन	ग्राम—मोहनपुर, भाया महागामा। जि0—गोड्डा ।
27.	श्री शंकर मोदक	जे. पी. कैम्प, [illegible]—कुशुण्डा, जि0—धनबाद, फोन—03[illegible]—[illegible]380353
28.	श्री मकरू महतो	मझीला—डीड मधुगोडा, [illegible]जपुर—भोया कतरास, जि0—धनबाद ।
29.	श्री आर. एन. झा	इस्को चासनाला, कोलियरी, क्वा0—एफ—28/बी, पो0—चासनाला, जि0—धनबाद, फोन—0326—2350237
30.	श्री के. डी. मिश्रा	मेन कालोनी, [illegible], जि0—धनबाद, फोन—0326—2461776.
31.	श्री अंजन कुमार खाँ	परमाणु खनिज विभाग [illegible] महल, जमशेदपुर, फोन—0657—2495276
32.	श्री आर. पी. जयसवाल	क्वा0 नं0—डी. टी. 2696, पो0—धुर्वा—राँची—फोन—0651—2404539.
33.	श्री दामोदर प्रसाद	क्वा0 नं0—1699, से0—3, धुर्वा—राँची—फोन—0651—2406076
34.	श्री पी. पी. प्रसाद	आ0 सं0—2—600, से0—2 [illegible] बोकारो, स्टील सिटी, फोन—06542—241905.

35. श्री के. सी. झा — आ0 सं0–2–292, से0–2.बी. बोकारो, स्टील सिटी, फोन–06542–245738.

36. श्रीमती उर्मिला देवी — ग्राम–रानीडीह, मोरडीहा, पो0–बुढियाडीह, जि0–गिरिडीह–810035, फोन–06549–244096.

37. श्रीमती फूलमति देवी — ग्राम+पो0–गाडा, (बसिया) जि0–गुमला–835229.

38. श्रीमती अनिता दयाल — श्री प्रकाशचन्द, आप्रा [illegible], जादो बाबू चौक, मालवीय मार्ग, हजारीबाग, फोन–06546–252187

39. श्रीमती कुसुम कुमारी — C/o श्री आर. एन. दांगी, कॉलेज मोड, कोर्स रोड, हजारीबाग, फोन–0651–223139

40. श्री ओम प्रकाश महतो — यूनियन लिडर, तीन पहाड, पो0–तीन पहाड, जि0–साहेबगंज । फोन–06426–25883140 ताराचन्द (PP)

इसके अतिरिक्त सी. सी. एल. कोलियरी कर्मचारी संघ, [illegible] कोलियरी कर्मचारी संघ एवं संथाल परगना कोलियरी कर्मचारी संघ तथा प्रदेश में निवास करने वाले अखिल भारतीय महासंघ के महामंत्री पदेन सदस्य हैं । तथा पॉच प्रमण्डल प्रभारियों का भी मनोनयन किया गया जिनका नाम एवं जिला सह दायित्व इस प्रकार है :–

प्रभारी का नाम	जिलों का दायित्व	पत्राचार का पता
श्री राजकुमार भक्त	प0 सिंहभूम, पु0 सिंहभूम, सरायकेला	क्वा0 नं0 2–28/282, यूरेनियम माईन कॉलोनी, जादूगोडा, प0–सिंहभूम फोन–0657–2730970. मो0–9431399214
श्री निर्मल कुमार सिंह	राँची, लोहरदगा, गुमला, सिमडेगा	नागरमल [illegible] सेवा सदन [illegible] बाजार [illegible], फोन–22[illegible], [illegible] पी
श्री सीता राम सिंह	पलामू, लातेहार, गढ़वा	ग्राम–पो0–सीमेंट फैक्ट्री पपला, क्वा0 नं0–C–34, मिस्त्री लेन–पपला जि0–पलामू, फोन–[illegible]–282211 (PP)
श्री पारसनाथ ओझा	हजारीबाग, चतरा, कोडरमा गिरिडीह, बोकारो, धनबाद	[illegible]–18, स्वांग कॉलोनी पो0–स्वांग, जि0–बोकारो । मो0–9835143366
श्री बासुकीनाथ झा	जामताड़ा, देवघर, दुमका, गोड्डा, साहेबगंज, पॉकुंड ।	महाप्रबंधक कार्यालय, विलबेरा हाउस, पो0–सोनारडीह, जि0–धनबाद फोन–0326–2392772.

।। भारत माता की जय ।।

BHARATIYA MAZDOOR SANGH

HASUBHAI DAVE (Advocate)

: RAJKOT OFFICE :

"SHRAM SADHANA", OPP. MUNI. WATER TANK, GONDAL ROAD, RAJKOT - 360 0023 (GUJRAT)

PHONE : (O) 0281-237 60 61 (R) 257 66 12, FAX: 0281-237 60 61

: MEMBER :
CENTRAL BOARD OF TRUSTEES
EMPLOYEES PROVIDENT FUND ORGANIZATION

: PRESIDENT :
ALL INDIA
BHARATIYA MAZDOOR SANGH

प्रति,

प्रिय श्री आदित्य साहू जी
महामंत्री, भारतीय मजदूर संघ
झारखण्ड प्रदेश।

महोदय,

आपका पत्रांक MMS/JHAR/04 दिनांक 29.06.2004 को प्राप्त हुआ। यह हर्ष का विषय है कि भारतीय मजदूर संघ झारखण्ड प्रदेश भगवान विश्वकर्मा जयंती पर स्मारिका 'श्रम साधना' का प्रकाशन कर रहा है। मेरा विश्वास है कि यह स्मारिका निश्चित ही श्रम प्रकाशनों में अपना स्थान सुनिश्चित कर श्रमिक वर्ग हेतु जानकारीवर्धक एवं प्रेरणादायी होगी।

शुभेच्छाओं सहित।

(हसुभाई दवे)

अध्यक्ष, भारतीय मजदूर संघ

पशुपति नाथ सिंह
मंत्री
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
झारखण्ड सरकार
राँची

झारखण्ड सरकार

आवास: मंत्रालय के पीछे
(पानी टंकी के पास)
डोरंडा, राँची
दूरभाष : 2403716 (का०)
2490686 (आ०)

संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि 17 सितम्बर 2004 भगवान विश्वकर्मा जंयती के शुभ अवसर पर भारतीय मजदूर संघ, झारखण्ड प्रदेश के द्वारा "श्रम साधना" स्मारिका प्रकाशित किया जा रहा है।

मुझे विश्वास है कि स्मारिका में केन्द्र एवं राज्य के औद्योगिक आर्थिक एवं सम सामयिक विषयों पर जो लेख प्रकाशित होंगे, उससे पाठकवृंद निश्चित रूप से लाभांवित होंगे। भारतीय मजूदर संघ के द्वारा मजदूर वर्ग के उत्थान के लिए जो कार्य एवं प्रयास किये जा रहे है, मैं उनके सफलता की कामना करता हूँ।

3/7/2004

(पशुपति नाथ सिंह)

श्री आदित्य साहु,
महामंत्री
भारतीय मजदूर संघ, झारखंड प्रदेश
सी0 डी0-206, सेक्टर-3
पो0-धुर्वा, रांची।

डा0 रवीन्द्र कुमार राय
मंत्री
झारखण्ड सरकार
उद्योग एवं श्रम–नियोजन एवं
प्रशिक्षण विभाग
अध्यक्ष, राज्य सजा पुनरीक्षण पर्षद ।

झारखण्ड सरकार

दूरभाषः
उद्योग 0651–2491085 (का.)
फैक्स 2491308
श्रम 0651–2490584 (का.)
फैक्स 2490915
आवास 0651–2360110

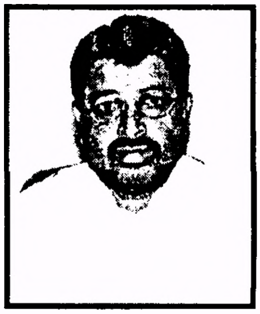

शुभकामना संदेश

श्रमशक्ति एवम् सृष्टि की रचना में अनोन्याश्रम संबंध है। औद्योगिकीकरण के परिवेश में श्रम, उद्योग, उपस्कर, औजार का अपना ही महत्व है एवं इन सब में सामन्जस्य स्थापित करते हुए सृष्टि का निमार्ण एवं विकास तभी संभव है जब पूज्यनीय बाबा विश्वकर्मा की कृपा उनसे जुड़े कार्यो में प्राप्त हो। ईश्वर की असीम अनुकम्पा से भगवान विश्वकर्मा की जयन्ती समस्त राष्ट्र में सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनायी जा रही है। इस पुनित कार्य हेतू मैं **भारतीय मजदूर संघ, झारखण्ड प्रदेश** को हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

14/9/04
(डा0 रवीन्द्र कुमार राय)

विश्व व्यापार संगठन धोखा है, धोखा है, भाई धोखा है !

रामप्रकाश मिश्र

संगठन मंत्री

भारतीय मजदूर संघ

आत्म संगठन

अभ्यास वर्ग में एक कुछ कहता है अन्य लोग उसे सुनते हैं। यदि कहने वाला यह समझाता है कि जो कुछ कहा जायेगा उसे सामने बैठे लोग ज्यों का त्यों समझेंगे यह उसकी भूल है । भाषण देने से दूसरे व्यक्ति के सुन लेने से उसमें चेतना आ जायेगी । सुनने वाले की सोच और विचारों में बदल आ जायेगा, यह मानना एक दिवास्वप्न है । चेतना में परिवर्तन तब आता है जब सुनने वाला व्यक्ति अपनी अपनी चेतना में परिवर्तन लाना चाहता है । चेतना में परिवर्तन लाना एक व्यक्तिगत उपलब्धि है । फिर भी अभ्यास वर्ग का आयोजन किया जाता है इसलिए की कार्यकर्त्ताओं में चेतना जागृत हो । यदि सुनने वाला चाहे तो – करत करत अभ्यास से जड़मति होत सुजान का कथन चरितार्थ कर सकता हैं ।

1. वर्ग और सम्मेलन में काफी अन्तर होता है । सभा/सम्मेलन का महत्व संख्यात्क है । इसलिए इन कार्यक्रमों में संख्या पर जोर दिया जाता है । संगठन की संख्या बल में वृद्धि हुई है यह दूसरों को दिखाने के लिये किया जाता हैं ।

2. अभ्यास वर्ग में ध्येयवाद अर्थात् गुणवत्ता पर जोर दिया जाता है । संगठन के बारे में हमारी जानकारी कितनी है यह भी अभ्यास वर्ग में पता चलता है ।

3. श्रम संगठन का एक विधान होता है । विधान के आधार पर जो सदस्य होता है वह वैधानिक सदस्य कहलाता है । वैधानिक सदस्यों की संख्या अस्थिर होती है कारण कि ऐसे सदस्यों में स्वार्थ का प्रतिशत अधिक होता है । यदि स्वार्थ की सिद्धि नहीं हुई तो चलता बने । वैधानिक सदस्य समय पर वैधानिक आपत्तियाँ उठाया करते हैं जिससे विवाद उत्पन्न होता हैं जो संगठन के लिये हितकर नहीं होता हैं ।

4. जो व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से संगठन की रीति–नीति–ध्येय और आदर्श से प्रभावित होकर सदस्य बनता है उसमें स्थायित्व होता है । वे धीरे–धीरे संगठन की आन्तरिक शक्ति बन जाते हैं ।

5. संगठन की वैधानिक सदस्यता उसकी जनशक्ति है । सिद्धान्तों से सहमत होकर जो सदस्य बनते हैं वहीं संगठन की आन्तरिक शक्ति है । एक प्रकार की आस्था, एक मनवाले कार्य कर्त्ताओं के समूह को संगठन की एकात्म शक्ति कहते हैं । संगठन के लिए धन की आवश्यकता होती है । मजदूरों द्वारा मजदूरों से मजदूर का संगठन के लिए इक्ट्ठा किया धन संगठन की सात्विक धनशक्ति कहलाती है ।

6. सब मिलकर आपस में विचार विमर्श कर के जो निर्णय लिया जाता है उसे [illegible] निर्णय कहते हैं । यदि इसमें कोई अपनी अलग पहचान बनाकर निर्णय कराता है तो [illegible] अर्थ में वह सामुहिक निर्णय नहीं हुआ । कारण कि सबके मत सही विलीनीकरण [illegible] । यह तो ऐसे हुआ जैसे सिकंजी (शर्बत) शक्कर, नमक, चीनी, व नीबू डालकर सिकंजी बनती है । यद्यपि यह समूह में विलीनीकरण हुआ है किन्तू नीबू, नमक और शक्कर अपनी–अपनी पहचान बनाये हुए रहते हैं । विलीनीकरण सूर्य की सात रंग की किरणें जैसा हो जैसे सूर्य उदय अस्त के समय आग के गोले जैसा होता है । दिन में केवल उजाला । कोई नहीं कह सकता कि सूर्य की किरणों में सात रंग है । हल्दी चूना एक साथ मिलायें तो एक अलग रंग बनता है। हल्दी का पीलापन और चूने की सफेदी ढूढ़ने पर भी नहीं दिखाई देती है । यह हुआ विलीनीकरण ।

7. सामूहिक नेतृत्व में जो जैसा दिखेगा वहीं उसकी प्रगति है । सामुहिकता में न किसी को हीं भावना से ग्रसित होना पड़ता है और न ही किसी को अभिमान की गुंजाइश रहती है । सफलता के बाद श्रेयांश के बारे में कोई विवाद नहीं होता है ।

8. यदि कार्यकर्ता किसी स्थान या कार्य के लिए अनिवार्य हो जाय तो उसे बदलने का प्रयास करना चाहिए । कारण कि कार्यकर्ता ने अपने को केन्द्र मानकर काम किया है । संगठन/कार्य उससे जुड़ गया है जो संगठन के लिए हितकर नहीं है । यह ध्यान रहे कि कोई कार्यकर्ता किसी स्थान या कार्य के लिए अनिवार्य न हो जाये यदि अनिवार्य हुआ तो इससे संगठन का नुकसान होगा । उसे dispensable बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए ।

9. संगठन में अच्छे और बुरे दोनों स्वभाव के लोग होते हैं । अच्छा जब जाता है तो दुःख होता है और बूरा जब आता है तो वह दुःखी करता हैं

बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं ।
मिलत एक दारुन दुःख देहीं ।।

— संत तुलसीदास

10. संगठन में एक साथ आने पर भी संगठन की दृष्टि से विकास स्वभाव गुण दोष के आधार पर होता है । जैसे — उपजत एक साथ जल माहीं ।

जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं ।।

11. कार्यकर्त्ता को अपने लिये कठोर दूसरों के लिये मृदुर होना चाहिए ।

12. कार्य के अनुसार वेशभूषा आवश्यक है ।

एक बार महात्मा गाँधी के आश्रम में एक सन्यासी आये । उन्होंने महात्मा जी से कहा कि हम

आश्रम में रहकर सेवाकार्य करना चाहते है । महात्मा जी ने कहा—आश्रम में रहकर आप सेवा कार्य करना चाहते हैं अच्छी बात है किन्तु सेवाकार्य करने के लिए आप को यह गेरूवा वस्त्र उतारना पड़ेगा । इस वस्त्र को धारण कर आप आश्रम में झाडू नहीं लगा सकेंगे । लोग झाडू आप के हाथ से छीनकर स्वयं सफाई करने लगेंगे सन्यासी वेश मे झाडू लगाने के काम के साथ तालमेल नहीं बैठेगा ।

13. संगठन के कार्य में मस्ती चाहिए । कार्यकर्त्ताओं में कार्य के प्रति मस्ती बढ़े इस प्रकार का प्रयास करना चाहिए । इसीलिए मस्ती बढ़ाइये और सबको मस्ती में डुबोइये तभी काम ठीक से चलेगा ।

14. जैसे शरीर को चलायमान करने के लिये प्राण का महत्व है ठीक उसी प्रकार संगठन को चलाने के लिये अनुशासन चाहिए बिना अनुशासन के संगठन का चलना मुश्किल है ।

15. यदि संगठन से हमारी कुछ अपनी व्यक्तिगत अपेक्षा होगी तो संगठन कार्य शिथिल होगा। गति आने में कठिनाई होगी । अपने हितों की अपेक्षा से कम बढ़ेगा । स्पष्ट कहा जाय तो निजहित की अपेक्षा से काम घटता है उपेक्षा से काम बढ़ता है ।

16. संगठन के लिए संगठनकर्त्ता में आत्मसंगठन होना आवश्यक है । यदि कार्यकर्त्ता के मन वाणी पर संयम न रहा तो संगठन कार्य में बाधा पहुँचती है । सबसे पहले हमें अपने आप को संगठित (संयमित) करना आवश्यक है तभी संगठन कार्य ठीक से चलेगा ।

शुभकामनाओं के साथ:

जय माँ काली मिनरल्स

राजमहल

श्री बैजनाथ राय

राष्ट्रीय मंत्री
भारतीय मजदूर संघ

मानवाधार उद्योग नीति

स्वाधीनता के बाद से ही राष्ट्र के आर्थिक विकास की चिन्ता सबको होने लगी । इसलिए तत्कालीन प्रधान मंत्री स्व0 जवाहर लाल नेहरू जी ने आर्थिक कार्यक्रम समिति के अध्यक्ष के रूप में स्वयं ही 1948 में प्रथम उद्योग नीति का नींव रखा । जिसमें यह कहा गया कि अपने देश के विकास के लिए राष्ट्रीय सार्वजनिक प्रतिष्ठान की (Public Sector) की स्थापना अधिकाधिक किया जाय क्योकि निजीकृत उद्योग (Privat Sector) मजदूर और राष्ट्र दोनो का शोषण करते है । समाजवादी विदेशी दृष्टिकोण ही उनके मन में प्रभावी था । इसलिए पाश्चात्य देशो में विशेषकर रूस सहित कम्युनिष्ट देश तथा समाजवादी विचार धाराओ प्रभावित देशो में जिस प्रकार सार्वजनिक प्रतिष्ठान की परम्परा शुरू हुई थी, उसे ही उन्होने अपने देश के लिए भी नमूना (Model) के रूप मं स्वीकार किया और यहाँ तक कह डाला कि सार्वजनिक प्रतिष्ठान नवीन भारत का नवीन मंदिर है ।

तब से लेकर 1956, 1969, 1980 एवं 1983 तक उद्योग नीतियों का सिलसिला चलता रहा । सार्वजनिक प्रतिष्ठान को ही वरीयता दी गई । यहाँ तक कि घाटे में चलने वाली बैंक आदि कई रूग्ण उद्योगों को उनके मालिको को आवश्यकता से अधिक मुआवजा (Compansation) देकर के भी राष्ट्रीयकृत (Nationalise) किया गया । कांग्रेस, कम्युनिष्ट सोसलीस्ट आदि सभी राजनैतिक दलों (चाहे वो सरकार मे थे या नहीं) की एक ही उद्योग नीति रही और वह था राष्ट्रीयकरण (Nalionatisation of Industry)

1989 में प्रथमबार यह बात लोगो के ध्यान में आया कि केन्द्रीय सार्वजनिक प्रतिष्ठान भ्रष्ट नौकरशाहियों के लिए शोषण का भण्डार है । जितना शोषण निजी उद्योग के कर रहे थे उससे भी कही अधीक सरकारी आफीसर कर रहे है और उनके साथ–साथ सार्वजनिक प्रतिष्ठानो से संलग्न राजनैतिक नेता, श्रमिक युनियन एवं संलग्न बहुत सारे लोगों का मिली–जुली लूट कार्यक्रम चल रहा है । इन्ही कारणों से कई उद्योग पुनः रूग्ण होते गये । साथ में सरकारी खजाना खाली होता रहा । परिणाम यह हुआ कि अधिकांश पूँजीपति तथा नौकरशाह रूपी सरकारी ऑफीसर दिन प्रतिदिन से धनी होते गये पर मजदूर एवं उद्योग दोनों ही गरीबो से भी गरीब होते गये । सांसद में गूँज उठने लगी ।

फलतः जाँच कमीटियाँ बनने लगी और 1991 में श्री मनमोहन सिंह, तत्कालीन अर्थमंत्री द्वारा एक नई अर्थनीति एवं उद्योग नीति की घोषणा हुई । जिसमे "पुर्नमुष्टिका भव (फिर से मूस बनो) की नीति का प्रतिपालन किया गया अर्थात् विनिवेश (Disinvestment) के आधार पर सरकारी कारखानों को देशी व विदेशी पूँजीपतियों के हाथ में बेच दिया जाय विदेशियों को अधिक से अधिक सुविधा प्रदान किये जाय अर्थात् राष्ट्रीयकरण का पूर्व नारा अब निजिकरण के रूप में बदल गया। किन्तू यह नारा पुनः पाश्चात्य देश प्रभावी हो गये । उनके द्वारा प्रतिपादित विश्व बैंक (World Bank) अन्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) एवं वैश्वीकरण (Globalisation) के नियम एवं पद्वति को नमूना बनाया ।

परिणाम आज सबके सामने है । आज सरकारे भले ही परिवर्तन हो किन्तु उद्योग नीति का आधार वही पाश्चात्य देशो का नकल ही रह गया है ।

किसी ने यह सोचने की आवश्यकता ही नही समझी की अपना देश एक अतिपुरातन देश है । यहाँ उद्योग नीति एवं श्रमिक नीति रहा है जिसके आधार पर यह राष्ट्र वैभव के शिखर पर रहा है । शायद ऐसा सोचने व बोलने में पिछड़ापन का बोध रहा होगा । इस डर से लोगो ने ऐसी चर्चा व विवेचना की जरूरत ही नहीं समझी ।

आखिर साफ है (I) देश में प्राप्य श्रम (Labour) और (II) सम्पदा (Reserve) बहुत कम देशो में दोनो होते है पर हमारे यहाँ दोनो है । किन्तु श्रम की बाहुल्यता अधिक है । दूसरी बात यह कि आखिर उद्योग की क्या आवश्यकता है ? तो यह बात स्पष्ट है कि इसकी आवश्यकता उस देश के आमलोगो को रोजगार प्रदान करना एवं राष्ट्र का आर्थिक विकास करवाना । मूलतः यही दो उद्देश्य के आधार पर नीति का निर्धारण होता है । हमारी उद्योग नीति निम्न दोनो बातो पर ही सफल सिद्व हो सकती है ।

(I) श्रम रूपी पूँजी का अधिकाधिक उपयोग ।

(II) प्राप्य सम्पदाओं का सदुपयोग

यदि इन दोनों बात को आधार माने तो हमे इसी को आधार मानकर अपने आत्मविश्वास के बल पर नीति निर्धारण करना होगा । कहते है ।

"उद्यःम साहस धैर्य बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः ।
षडेते यत्र वर्तन्से तत्र देवः सहायकृत ।।

उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धिः, शक्ति, पराक्रमा आदि छ गुड़ो के आधार पर ही सफलता मिलती है।

हमने इन सब की अपेक्षा की है, हमने तो अपने विश्वास को भूलकर पाश्चात्य विश्वास को वरीयता ही है । अपने आप को विश्वबाजार में बिकने वाला एक बाजार बस्तु बना लिया है । हम भूल गये है कि हम सिंह है जो बाजारो में बिकता नही । हमे अपने हाथी रूपी स्वरूप को भूलना होगा जो शक्तिशाली होते हुये भी बाजार में बिकता है :– कहते है कि

"येनात्मा पष्पतां नीतः स एवान्विष्यते जनः ।
हस्ती हेमसहस्त्रेण क्रियते न मृगाधिपः ।।

जो भी हो आज आवश्यकता है कि नीतियों का निर्धारण स्वतंत्र बुद्धि के आधर पर हो, अपने वातावरण के अनूकुल हो एवं स्वेदशी के आधार पर हो । साथ ही किसी भी नीति विशेषकर उद्योग नीति का आधार श्रम नीति क आधार पर अर्थात मानव के आधार पर हो, हमे ऐसे उद्योग चाहिए जिसमें अधिकाधिक रोजगार हो तथा साधारण जनता उससे उपकृत हो सके । इसके लिए सभी विद्वत जनो से चर्चा करके **"मानवाधार उद्योग नीति"** बनाना ही इस समय परम धर्म है । आइये हम सब मिलकर इसी दिशा की ओर प्रयास करे ।

With best compliments from :

RAMESH CHANDRA DUTTA

E.C.L. CONTRACTOR

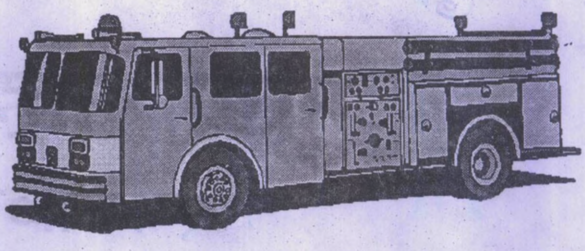

CHITRA COLLIERY

AT.-ASANBONI, P.O.-BARATAR, DEOGHAR

डा0 बसंत कुमार राय

मंत्री

भारतीय मजदूर संघ

वर्त्तमान संदर्भ में स्वदेशी की अवधारणा

भारत का अतीत वैभवशाली

भारत वर्ष अत्यन्त ही वैभवशाली एवं ऐश्वर्य से परिपूर्ण देश रहा है । प्राचीन काल में भारत और समृद्धि एक दूसरे के पर्यायवाची शब्द के नाते जाने जाते रहे हैं ; भारत यानि वैभव । ऐश्वर्य और समृद्धि यनि भारत । भारत में अनेक वैज्ञानिक और अभियंता उस समय कार्यशीन थे जब पश्चिमी देशों में मनुष्य के आर्थिक विकास का विचार आरंभ भी नहीं हुआ था ।

- भारतीय ज्योतिर्विदों ने सबसे पहले यह ज्ञात कर लिया था कि सूर्य स्थिर तथा पृथ्वी घूमती है ।
- दशमलव प्रणाली का मूल स्थान भारतीय गणित शास्त्र माना जाता है ।
- गुरूत्वाकर्षण की संकल्पना हमारे भौतिकविदों को बहुत पहले से ही ज्ञात थी ।
- अजन्ता एलोरा की गुफाओं में अंकित चित्रों का रंग हमारे विकसित रसायनशास्त्र का परिचायक है । बंदूक की बारूद से लेकर कई रसायन भारत से दुनिया भर में निर्यात किए जाते थे । नागर्जुन जैसे रसायनशास्त्रियों की ख्याति जगत्प्रसिद्ध है ।
- भारत में आयुर्वेद अत्यन्त ही विकसित शास्त्र रहा है । शल्य चिकित्सा की दीर्घ परंपरा यहाँ रही है । प्लास्टिक सर्जरी जैसी तकनीक हमारे यहाँ अत्यन्त प्राचीन काल में ही प्रचलित थी।
- वास्तुशिल्प के विकास के नमूने अनेक भवन एवं मंदिर आज भी विद्यमान है ।
- कुतुबमीनार के पास का जंग न लगने वाला लौह स्तंभ हमारे विकसित धातुशास्त्र का प्रमाण है ।
- उच्च कोटि के वस्त्रों से लेकर लौह तक का निर्माण हमारे यहाँ होता था । ढ़ाका का मलमल विश्व भर में प्रसिद्ध था ।
- शुक्रचार्य से लेकर चाणक्य तक अर्थशास्त्रियों की एक सुदीर्घ परंपरा रही है ।
- समाजशास्त्र, योगशास्त्र तथा आध्यात्मिक शास्त्रों में तो हम अपूर्व थे ही ।
- हमारे यहाँ शोषण मुक्त समाज का ढ़ाँचा था । विकेंद्रित कृषि व्यवस्था थी और हर घर उत्पादन का केन्द्र था ।

- भारत सोने की चिड़िया कहा जाता था और यह केलव सुदूर अतीत का भारत नहीं, वरन् 17 वीं और 18 वीं शताब्दी का भारत भी ऐसा ही समृद्धशाली था ।

आर्थिक शोषण और पश्चिमी देशों की संपन्नता

सन् 1615 ई. इंग्लैंड के सम्राट के दूत सर टॉमस रो की प्रार्थना पर अंग्रेज व्यापरियों को भारत मे व्यापार करने की अनुमति दी गई थी, फलतः लगभग 150 वर्षों में अंग्रेजों ने ईस्ट इंडिया कम्पनी के माध्यम से भारत के शासन पर कब्जा कर लिया । प्लासी की लूट के धन से इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति हुई । मशीनीकरण और बड़े पैमाने पर उत्पादन की पद्धति आरंभ हुई। इसके लिए आवश्यक संसाधन और उत्पादित वस्तुओं को बेचने के लिए बाजार हेतू भारत का उपयोग होने लगा । लगभग दो सौ वर्षों तक भारत का जबर्दस्त आर्थिक शोषण चला । सारी व्यवस्थाओं को केन्द्रीकरण हुआ तथा भारत की प्राचीन विकेंद्रित व्यवस्थाओं को समाप्त कर दिया गया । भारतीय कारीगरों व बुनकरों पर अमानुषिक अत्याचार ढ़ाये गए । भारतीय कुशल कारीगर बेकार होने लगे, आत्मनिर्भर गाँवों की रचना समाप्त होने लगी तथा यहाँ की अर्थव्यवस्था पराश्रित हो गई ।

स्वतंत्रता के पश्चात् अपनाये गए विकास–मार्ग के कारण दुर्दशा

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय एक अवसर उपलब्ध हुआ था कि पिछली भूलों को ठीककर नए विकास–पथ की रचना हो सकती थी, परन्तु पं0 जवाहरलाल नेहरू भारतीय मिट्टी में रचे बसे नही थे । उनकी विश्व दृष्टि पश्चिमी विचारों से प्रभावित थी । रूस की समाजवादी ढ़ाँचा के प्रति वे आकर्षित थे । 1956 ई. में नेहरू महलानोबिस मॉडल के आधार पर भारत की आर्थिक पुनर्रचना आरंभ हुई, जिसके भारी दुष्परिणाम हुए ।

- नकल पर आधारित सरकार की औद्योगिक नीति ने भारत को कंगाल और ऋणग्रस्त बना दिया तथा देश को आर्थिक गुलामी की चक्की में डाल दिया । आज देश के ऊपर लगभग 17 लाख करोड़ रूपैये का कर्ज है । चार लाख करोड़ रू. का विदेशी कर्ज तथा तेरह लाख करोड़ रू. का आंतरिक कर्ज ।
- विश्व के सकल राष्ट्रीय उत्पाद में भारत का हिस्सा घटकर मात्र एक प्रतिशत रह गया । विश्व के कुल औद्योगिक उत्पादन में भारत का हिस्सा मात्र 0.7 प्रतिशत हो गया । विदेशी व्यापार में हिस्सा 0.5 प्रतिशत हो गया ।
- लघु उद्योग, ग्रामोद्योग एवं हस्तकरघा उद्योग पर भारी संकट आया । वे उद्योग समाप्त होने लगे। बेरोजगारी तेज गति से बढ़ने लगी ।
- देश में काले धन की एक समानांतर अर्थव्यवस्था पनप गई ।

- विज्ञान विदेशी तकनीकी की दासी हो गई ।
- घाटे की अर्थव्यवस्था के कारण मुद्रास्फिति तथा मंहगाई बढ़ गई ।
- हरित क्रांति के नाम पर विदेशी बीज और रासयनिक खाद का प्रचलन बढ़ा और हमारी खेती बर्बाद हो गई ।
- प्रदूषण का भारी खतरा सर्वत्र व्याप्त हो गया ।

भूमंडलीकरण, उदारीकरण, विश्व व्यापार संगठन की स्थापना–दासता का नया दौर

विश्व व्यापार संगठन की स्थापना – डंकल प्रस्तावों के ऊपर हुए समझौते के परिणामस्वरूप – का उद्देश्य विकसित देशों के आर्थिक हितों का संरक्षण तथा विकासशील और अविकसित गरीब देशों की तकनीकी और आर्थिक विपन्नताओं का लाभ उठाकर वहाँ की विपुल प्राकृतिक संपदा का शोषण करके उन्हें विकसित देशों से प्रतिस्पद्धत्मिक स्थिति में पहुँचने से रोकर बहुराष्ट्रीय विदेशी निगमों के हवाले करना ही है । यह कदम भारत जैसे देशों को लूटकर कंगाल एवं गुलाम बनाने की एक नई सभ्य एवं राजनीतिक चाल है । भूमंडलीकरण उपनिवेशवाद की अबतक की सर्वाधिक विकसित तथा खतरनाक व्यवस्था है । उदारीकरण और भूमंडलीकरण भारत को पराधीनता के नए दौर में ढ़केलने का सशक्त औजार है ।

- कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है । यह मात्र व्यवसाय की चीज नहीं, वरन हमारी जीवन–प्रणाली है । व्यवसाय की दृष्टि से भी देखें तो भारत के निर्यात का मुख्य आधार आज भी कृषि उत्पादन, सूती कपड़ा, कला एवं हस्तशिल्प है । अमेरिका एवं यूरोपीय देश अपने किसानों को भारी राजसहायता (subsidy) प्रदान कर रहें हैं तथा भारत पर दबाव है कि राज सहायता समाप्त हो । जबरन आयात (खाद्‌य सामाग्रियों की) लादा जा रहा है । किसान लाभकारी मूल्य से वंचित हो रहे है – कृषि की लागत बढ़ रही है ।
- पेटेंट की नई व्यवस्था 1 जनवरी 2005 से लागू हो जाएगी और हमारी कृषि तथा दवा उद्योग पर कहर बरस जाएगा । खेती पूरी तरह गुलाम हो जाएगी । विदेशी बीज कंपनियों का वर्चस्व छा जाएगा । शोध एवं अनुसंधान की समाप्ति हो जाएगी ।
- विदेशी पूंजी निवेश की खुली छूट देने के कारण हमारे छोटे–छोटे उद्योग समाप्ति के कगार पर है । हम उद्योगों के स्वामी नहीं विदेशी कंपनियों के माल के व्यापारी–मात्र बनकर रह जाएँगें ।
- देश के सेवा–क्षेत्र पूरी तरह से विदेशियों के हाथ में जा रहे है । बैंकिग, बीमा, दूरसंचार, परिवहन, पर्यटन जैसे अनेक क्षेत्रो पर विदेशियों का प्रभुत्व स्थापित हो जाएगा ।

- भारत के बाजार में विदेशी कंपनियों के समानों की भरमार है । दवायें भी विदेशी कंपनियों की ही है ।
- एक विदेशी कंपनी यदि एक डॉलर भारत में लगाती है तो बदले में 3 डॉलर बाहर ले जाती है ।
- एक समय भारत में धान की 30,000 किस्में थी । आज मात्र कुछ सौ ही बची है अन्य सभी विदेशी कंपनियों के षड्यंत्रों का शिकार हो गई ।

सारी समस्याओं का एक ही समाधान – स्वदेशी

आज अपना देश आर्थिक गुलामी की ओर तेजी से बढ़ रहा है । हम परावलम्बी होते जा रहे है । गरीबी, बेरोजगारी, विषमता, विलासिता तथा इससे उत्पन्न असंतोष इत्यादि समस्याएँ देश को घेर रही है । स्वायत्त समाज एवं आत्मनिर्भर जीवन नष्ट हो रहा है । विदेशी कंपनियाँ को उदारीकरण के नाम पर जनता का आर्थिक शोषण करने की छूट मिल गई है। भोगवाद को बढ़ावा मिल रहा है । भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्य नष्ट हो रहे है । विदेशी कंपनियाँ आर्थिक शोषण, मानसिक दासता, सामाजिक विकृतियाँ तथा सांस्कृतिक प्रदूषण ला रही है ।

इन सब समस्याओं का एकमात्र उत्तर है – स्वदेशी को प्रोत्साहन स्वदेशी का आंदोलन केवल स्वदेश निर्मित वस्तुओं के उपयोग हेतू आग्रह का ही आंदोलन नही, वरन, स्वदेशी संस्कृति, स्वदेशी जीवन मूल्य, स्वभाषा, स्वदेशी आधार–विचार, राष्ट्रीय स्वातंत्र्य, आर्थिक आत्मनिर्भरता और रोजगारयुक्त भारत निर्माण का जनांदोलन है । स्वदेशी के उपयोग से देश का पैसा देश में ही रहेगा, हमारे उद्योग–धंधे बढ़ेंगे, हमारी कृषि सुदृढ़ होगी, रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, हमारी गरीबी कम होगी, हम स्वावलंबी बनेंगे तथा हमारी आजादी बनी रहेगी।

With best compliments from :

☎ : [illegible]3-224[illegible]

Multi Colour Printing, Stationers & General Order Suppliers

UNIT OF S.S.I.-PMT

Spl.: Tie, Badge, Belt, I. Card, Diary, Question, Shield, Medal.

COMPUTRISED

UNITED PRINTERS

LETTER PRESS, SCREEN & OFFSET PRINTING, KEY RING, STICKER, LAMINAION, COMPUTER STAMP ETC.

GOLA ROAD (SINHA MARKET), RAMGARH CANTT., DISTT.-HAZARIBAG (JHARKHAND)-829122

ताकि हम और भी कदम दर कदम अग्रसर हो सकें । अतः हमारा अनुरोध है कि हम भारतीय योग्यता क्षमता से आगे जा कर कार्य करना होगा यह हमारे लिये एक युद्ध स्तर स्थिति का कार्य है । हमें क्या करना है यह समझना आवश्यक है हम अपने उपलब्ध श्रोतों का मानव श्रमशक्ति की ऐसी उपयोगिता करें जो हमें शीघ्र गतिमान कर सके हमें यहाँ न तो कुछ अतिरिक्त हमे करना है और न तो नए शक्ति की खोज हमें करना है । बस अपने श्रोतों को कुशल प्रबन्ध पूर्वक उच्चतम स्तर तक उपयोग करें और स्मरण रखना चाहिए कि :-

- हर क्रियाशील कार्यकर्त्ता प्रतिदिन कार्यरत रहे ।
- सभी पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता कम से कम आठ घंटे कार्यरत रहें ।
  भारतीय मजदूर संघ में जिससे कुछ प्रभाव दिखे ।
- हर स्तर में हम जागरूकता पैदा करें जिससे अपने सामने जो चुनौतियों है वह समुचित रूप से समझ में आ सके ।
- हम पुनरावृत्ति एवं अतिक्रमण जैसे क्रिया से दूर रहें ।
- हम भविष्य की क्रियाकलापों की योजना की दूरदर्शिता पूर्वक करें ।
- हम समय के सदुपयोग का चिंतन करें ।
- सभी पदधारी अपने कार्य कुशलता से करें एवं सामूहिक निर्णय लें ।
- हम सब कार्यकर्त्ता ज्ञान एवं दूर दृष्टि सम्पन्न हैं ।
- हम सभी एकाकार होकर क्रियाशील हो और किसी को पीछे न छुटने दें ।
- हमें ऐसे ओर सुझाव प्रस्तुत कर सकते हैं । अपनी छोटी बड़ी बैठकों में चर्चा कर सकते हैं और अपने लोगों से आग्रह कर सकते हैं कि एक विचारों को लिपिबद्ध कर लें किन्तु सबसे पहले हम यह व्यवहारिक चिन्ता करें कि सभी मानव है अतः कार्य को अनुपालन कराने वाले सबसे पहले मानवतापूर्ण व्यवहार/आचरण करें ।
- भारतीय मजदूर संघ जैसे बड़े संयंत्र के हम कल पूर्जें हैं किन्तु हम सभी मोहर ही नहीं अपितु अपने विवेक का व्यवहार भी करें ।
- हम कम से कम औपचारिक्ताएँ किन्तु विधि सम्मत क्रिया करें ।
- हम स्मरण रखें कि किसी संगठन की व्यवस्था स्वतंत्र अनवृत्ति की परिसीमन करती है अन्ततः हम सब याद रखें हमारा ध्येय है – **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया** :- सभी सुखी हों सभी निरोग रहें ।

उपरोक्त तथ्य हमारे कार्यो को उचित दिशा में गतिमान करेगी हमारा अगला प्रयोग दीर्घकालिक ओर अल्पकालिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु पथ निर्धारण है जिससे हम अपने लक्ष्य तक पहुँच सकें इससे हम और प्रचूर साधन सम्पन्न होंगे इस चक्र को हमें निरन्तर गतिमान करते रहना है अन्ततः हम लक्ष्य को प्राप्त करेंगे ।

.... समाप्त ....

महादेव सिंह
अध्यक्ष, भारतीय मजदूर संघ
झारखण्ड प्रदेश

मैं नहीं तू ही

भारतीय मजदूर संघ मजदूरों द्वारा मजदूरों के लिये एक गैर राजनीतिक श्रम संगठन है । इसमें वही मजदूर शामिल होता हैं जिसको भारत माता से प्रेम है, लगाव है तथा जुड़ाव है । भारत माता से तात्पर्य है कि भारत के भूभाग पर जो जन, जल, जंगल, पशु–पक्षी है उससे उसको प्रेम है। भारत की परम्पराओं, रीति रिवाज, पर्व व त्योहारों से उसका अटूट नाता है इसीलिये तो सदियों से चली आ रही विश्वकर्मा जयन्ती मनाना शुरू किया जो आज श्रमिक क्षेत्र में धूमधाम से मनाई जाती है । भारत का पर्यावरण दूषित न हो इसकी चेतना लाने के लिए पर्यावरण मंच के बैनर तले पर्यावरण दिवस मनाता है । जात–पात का भेदभाद का जहर जो पूरे देश के वातावरण को विशाक्त किये हुए है उसे मिटाने के लिये सर्वपंथ समादर मंच बनाया है । अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी का 25 मार्च को बलिदान दिवस मनाकर सभी पंथ व सम्प्रदाय को भाई चारा का संदेश दे रहा है । स्वदेश भाव जगाने के लिए प्रतिवर्ष 12 दिसंबर को बाबू गेनू बलिदान दिवस मनाता है । सब मिलाकर भारतीय मजदूर संघ साम्यवादियों की इस सोच को जो प्रचारित एवं प्रसारित किया गया है कि "मजदूर सर्वहारा है" को बदलकर "मजदूर राष्ट्र निर्माता" है के भाव को मजदूरों में लाया है । मालिक मजदूर के दुश्मन नहीं, मजदूर मालिक का शत्रु नहीं बल्कि वे एक दूसरे के पूरक हैं इसलिए राष्ट्रहित, उद्योगहित, मजदूरहित तीनों के हित का ध्यान आवश्यक है का भाव मजदूरों मे लाने का प्रयाय किया है । इस त्रिसूत्री भाव के बिना देश का भला नहीं हो सकता है और न ही उद्योग ठीक से चलेंगे तथा मजदूर भी सुखी नहीं रह सकता है । तीनों का कल्याण अन्योन्याश्रित है । यदि राष्ट्र गिरेगा तो उद्योग और मजदूर खड़ा नहीं रह सकता है । यदि उद्योग नहीं रहेगा तो मजदूर कहां जायेंगे। यदि मजदूर गिरेगा तो उद्योग और राष्ट्र कैसे रह पायेंगे । इसलिये तीनों हितों का ध्यान रखना आवश्यक है ।

इन सब बातों को हम तभी पूरा कर सकेंगे जब हमारा सबल संगठन होगा । संगठन खड़ा करने के लिए जो बातें आवश्यक है उनमें प्रथम है संपर्क जितना अधिक सम्पर्क होगा उतना ही लोग जुड़ेगे । सम्पर्क करने वालों में चार विशेष गुण आवश्यक हैं – प्रथम, शांत पूर्वक सुनने का धैर्य, दूसरे मृदुभाषी होना, तीसने मस्तिष्क ठंडा होना, चौथे घूमते रहना । यानि वाणी में शक्कर, पैर में चक्कर,

मस्तिष्क ठंडा तथा शांतपूर्वक सुनने का धैर्य यदि है तो सम्पर्क का लाभ होगा ।

सम्पर्क में आये हुये लोगों की बैठक करना तथा संगठन का स्वरूप देना इसके बाद अलग अलग लोगों को काम देना अर्थात् उनको नियोजित करना । यह सब काम एक दूसरे से परामर्श से ही होना चाहिये ।

निर्णय को लागू करने के लिये लोगों का चयन आवश्यक है । काम में सफलता का श्रेय सहयोगियों को दिया जाय और विफलता यदि संयोजक (संगठक) अपने हिस्से में लेता है तो संगठन ठीक से चलेगा ।

संगठन कई प्रकार के होते है । संकट में समाज संगठित होता है। संकट टला तो संगठन का विघटन आवश्यक है । इसलिये ऐसे संगठन को तात्कालिक संगठन कहते हैं । व्यक्ति भक्ति के कारण बना संगठन, जातीय आधार पर बना संगठन जिसमें साम्प्रदायिकता झलकती है ।

राजनीतिक संगठन जिसमें मनुष्य निजी स्वार्थ के कारण खड़े होते हैं । आर्थिक संगठन भारतीय मजदूर संघ का संगठन राष्ट्र, उद्योग और मजदूर तीनों हितों को लेकर खड़ा है ।

एक बात ध्यान में रहे कि जैसे चादर, धोती, दरी, साड़ी तथा धागा में एक तत्व वर्त्तमान है कपास । तखत, टेबूल व बेंच में एक तत्व वर्तमान है लकड़ी उसी प्रकार सभी प्रकार के संगठन में एक तत्व वर्त्तमान है वह है आत्मीयता । इसके अभाव में कोई भी संगठन चल नहीं सकता है । खड़ा नहीं रह सकता है ।

संगठन की शक्ल त्रिकोण है जिसमें साध्य, साधन और साधक शामिल है । एक भुजा साध्य है तो दूसरी भुजा है साधन । अपना साध्य है मजदूरों की सेवा करना । उनमें राष्ट्र भाव निर्माण करना ताकि वे राष्ट्र उत्थान में सहयोगी बन सकें ।

साधन पद्धति से संगठन खड़ा करना सम्पर्क में आये व्यक्तियों का ज्ञान वर्धन करना साधन के रूप में अन्य साधनों के साथ ही जीवमान इकाई के रूप में है अर्थात् कार्यकर्ता है ।

साध्य परिस्थितियों के कारण बदलता नहीं है । साध्य अचल है । कार्यकर्ता के कारण चिन्तन बढ़ता है ।आत्म चिन्तन के कारण कार्यकर्ता में आत्मबोध होता है । आत्म बोध के कारण कार्यकर्ता में बदलाव आता है । सभी साध्यों की पूर्ति स्वस्फूर्ति के कारण, नाम कमाने के लिये या निःस्वार्थभाव से काम करने के लिये स्फूर्ति होती है । लक्ष्मी मन्दिर को बिरला मन्दिर कहते है

क्योंकि बिड़ला ने बनवाया था । लक्ष्मी नारायण गौण हो गये बिड़ला का नाम आगे आ गया । मन्दिर बना किन्तू नाम आगे आ गया । प्रेरणा मंदिर बनवाने के लिए धन व नाम कमाने की इच्छा के कारण हुई ।

सेवा करने की प्रेरणा सेवा भाव के कारण हो तो अच्छी बात है । नर्स मरीज की देखभाल करती है । यदि देखभाल में कमी रह गई तो उसे सजा मिलती है । नर्स में सेवा भाव पैसे के कारण आया । वैसे कुछ व्यक्ति समाज की सेवा, प्रतिष्ठा पाने के लिए, या पैसा पाने के लिये करते है । निःस्वार्थ भाव से की गई सेवा सर्वश्रेष्ठ है जो कठिन काम है ऐसे लोग बहुत कम मिलते है ।

कार्यकर्ता एक बचन शब्द है याने व्यक्ति । उसे समान अनेक कार्यकर्ता खड़ा करना चाहिए यानी व्यष्टि से बहुवचन समष्ठि बनना चाहिए । व्यष्ठि से समष्टि बनने के लिये जैसे मक्के का दाना जमीन में गिरता है । मिट्टी में सड़ता गलता है उगता है और अंत में मक्के की बाली बनता है । एक से अनेक होने के लिए कष्ट उठाना होगा ।

कार्यकर्ता का कार्य से अटूट संबंध होता है जो कार्य करे वह कार्यकर्ता । इन्हें अलग नहीं किया जा सकता । कार्य किए बिना किसी को कार्यकर्ता नहीं कहा जा सकता है । कार्य और कार्यकर्ता राधा कृष्ण की तरह हैं । राधा कृष्ण को बेहद प्यार करती थीं किंतू कृष्ण 'राधा कृष्ण' को एक मानते थे । इसलिए अलग से प्यार करने का प्रश्न ही नहीं उठता । कृष्ण ने कभी नहीं कहा कि राधा मेरी है । ऐसा कहने से राधा कृष्ण अलग अलग हो जाएंगे । यही स्थिति कार्य और कार्यकर्ता की होनी चाहिए ।

कार्यकर्ता देनेवाला, लेनेवाला, रखनेवाला होना चाहिए । देने वाला से तात्पर्य है संगठन के लिए पर्याप्त समय देना । कष्ट सहना, परिश्रम करना । किसी से भी गुण प्राप्त करे । धैर्य रखने वाला हो । जल्दबाजी न करें । मधु मक्खी कहां कहां से रस लेती है अंत में उसे शहद के रूप में परिवर्तित करती है । संगठन को अनेक स्थान से अनुभव प्राप्त कर उसे संगठन के हित में परिवर्तित करना चाहिए ।

जो निष्काम भाव से निश्चल रूप से खड़ा है वही संगठन कार्य कर सकता है । निष्काम भाव से प्रेरणा–राष्ट्र का भला हो, राष्ट्र उद्योग और मजदूर हित की बात हो । परम निष्ठा निष्काम भाव, निश्चल, निर्लिप्तता, आर्थिक पारदर्शिता का विशेष गुण है । सामाजिक कार्य करते समय सुचिता तथा स्थिरता मन में हो, अपने साथ काम करने वाला सहकारी तैयार करना । समष्टि

सापेक्ष्य काम करना। आयु ज्येष्ठता के कारण मेरे बाद आया उसे बड़ा क़ाम मिला, मुझे नीचा काम ऐसा नहीं सोचना । हम सब एक यात्रा के यात्री है कोई आगे और कोई पीछे इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए । कार्यकर्ता ऐसा होना चाहिए जैसे ओ पॉजिटिव ब्लड ग्रुप । जो किसी मरीज के शरीर में दिया जा सकता है। अत्रिगोत्र की तरह होना चाहिए ताकि गोत्र के अंतर के कारण शादी में बाधा न पहुंचे ।

जैसे पानी का निश्चिम आकार नहीं होता है । जिस बर्तन में है वही उसका आकार है । जो कार्यकर्ता है उसका भी पानी की तरह कोई आकार नहीं होता है । जिस काम में लगा है वही उसका आकार है । काम छोटा है या बड़ा सबमें कार्यकर्ता लगा है । मेरा सहयोगी मुझसे बड़ा हो ऐसी भावना तथा सफलता का श्रेय सहयोगियों को देना । एक के बाद एक जोड़ने वाला कार्यकर्ता हो। समूह में कार्य करने की आदत हो ।

सहमति, परिश्रम, जिनके साथ काम करना है उनके साथ विलीनंता । जैसे चूना और हल्दी चूना अपनी सफेदी छोड़कर हल्दी अपनी जरदी छोड़कर एक दूसरे के साथ विलीन होकर एक अलग रंग निर्माण करते हैं उसी प्रकार की विलीनता होनी चाहिए ।

चैतन्य शक्ति युक्त कार्यकर्ता आवश्यक है । कार्यकर्ता व्यक्ति सापेक्ष नहीं सापेक्ष होना चाहिए। कार्यकर्ता का चिंतन ओर चिंतन करते रहना चाहिए ।

सफलता का केंद्र मैं हूं ऐसी भाव आने से कार्यकर्ता का रखलन होता है । अहंकार आने से दूसरो के प्रति तुच्छता का भाव बढता है ।

अहंकार हमेशा कर्तृत्ववान के पास जाता है जो सामान्य कर्तृत्ववान हैं अहंकार उनके पास नहीं जाता है । कार्यकर्ता अहंकार मुक्त हो इसकी खोज करते रहना चाहिए । एक व्यक्ति के पास संगठन का केंद्रित होना संगठन का विघटन होना है । संगठन का कार्य कर्तृत्ववान कार्यकर्ता की सहकारी टोली के साथ होता है । कुछ लोग अकर्तृत्ववान व्यक्तियों की टोली बना लेते हैं । सामुहिक निर्णय लेते समय सब हाँ कहने वाले होते है । दौड़ धूप करना । सहकारी खड़ा करना, मेरे सहकारी को यदि दायित्व दिया गया तो मैं उसके निर्देशों का पालन करूंगा यह भाव जो सामान्य कर्तृत्ववान होते हैं उनमें नहीं होता है । इसलिए आवश्यक है कि यदि कार्यकर्ता योग्य है किंतू चालाक है तो उसकी अपेक्षा कम योग्य एवं समर्पित कार्यकर्ता से संगठन ठीक चलेगा न कि योग्य व चालक से।

जो संगठक हैं उन्हें इन बातों पर सदैव ध्यान रखना चाहिए और समर्पित कार्यकर्ता तैयार करना चाहिए जिसमें सदैव मैं नहीं तू ही का भाव भरा रहे ।

रघुवंश नारायण सिंह
संगठन मंत्री
भा0म0 संघ, झारखण्ड प्रदेश

विवादों के निष्पादन में :–

श्रम कानून की महत्ता

कानून के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के श्रम विवादों के सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार के कानून है। किन्तु औद्योगिक विवाद अधिनियम – 1947 (Industrial Dispute Act-1947) है जिसमें सामूहिक सौदेबाजी (Collecting Bargaining) के आधार पर श्रम विवादों के निष्पादन की व्यवस्था है ।

इस कानून के कुल 7 अध्याय के अन्तर्गत कुल 4 धारायें हैं एवं कुल 5 परिशिष्ठ **(Shedule)** है जो निम्न प्रकार से है :–

अध्याय I (Chepter-I)	-	प्रारंभिक (Preliminary)
अध्याय II (Chepter-II)	-	इस कानून के अन्तर्गत अधिकारी (Authorities under this act)
अध्याय II A (Chapter-II A)	-	परिवर्तन सम्बंधी सूचना (Notice of change)
अध्याय II B (Chapter-II B)	-	कुछ व्यक्तिगत विवादों को पीड़ा निवारण अधिकारी को सुपूर्द करने के सम्बन्ध में (Reference to certain Industrial Dispute to Grivances Seltlement Authority)
अध्याय III (Chapter III)	-	बोर्ड को या ट्रिब्युनल में विवादों को सुपूर्द करने के सम्बन्ध में (Reference of Dispute to Board, court of Tribunol)
अध्याय IV (Chapter IV)	-	विधिक्षमता और अधिकारियों के कर्त्तव्य (Procedure, Power and duties of Authority)
अध्याय V (Chapter V)	-	हड़ताल व तालाबंदी (Strike and Lock out)

विदेशी आर्थिक तानाशाही, नही चलेगी, नही चलेगी !

अध्याय V A (Chapter V A)	-	काम की विरती व छँटनी (Lay off and Retrenchment)
अध्याय V B (Chapter V B)	-	काम की विरती, छँटनी एवं कुछ प्रतिष्ठानों को बन्द करने के सम्बन्ध Retrenchment and closer of certain Establishment)
अध्याय V C (Chapter V C)	-	श्रमिकों के प्रति गलत आचरण (Unfair Labour Practice)
अध्याय VI (Chapter VI)	-	दण्ड (Penalties)
अध्याय VII (Chapter VII)	-	विविध (Mascellencas)

परिशिष्ट (Schedule)

The First Schedule	-	किन किन उद्योगों को सार्वजनिक उपयोगी प्रतिष्ठान Public Utility Establishment के रूप में घोषित किया जा सकता है – धारा 2 (VI)
The Seecond Schedule	-	लेबर कोर्ट के अन्तरयुक्त विषय (Matter within the Juridisection of Lobour court)
The Third Schedule	-	इंडस्ट्रियल ट्रिब्युनल के अन्तागर्त के औद्योगिक विवाद
The Fourth Schedule	-	काम की शर्तो के सम्बन्ध में जिसमें परिवर्तन हेतु सूचना का प्रावधान
The Fifth Sehedule	-	श्रमिकों के प्रति गलत आचरण के सम्बंध में (Related to Unfair Labour Practice)

औद्योगिक विवाद किसे कहते हैं : (What is Industrial dispute)

Section 2. K.- औद्योगिक विवाद को परिभाषित करता है जो निम्न है :-

औद्योगिक विवाद का अर्थ ऐसे विवाद या मतभिन्नता जो किसी श्रमिक (कामगार) के रोजगार (Employment) या बेरोजगार (Non Emplyment) या रोजगार के शर्त्त के सम्बन्ध में (Terms of Employment) या काम के शर्त्त (Conditon of Labour) के बारे में हो यह विवाद नियोजक व नियोजक के बीच, नियोजक व कर्मचारी के बीच, कर्मचारी व कर्मचारी के मध्य हो सकता है ।

किसी भी औद्योगिक विवाद के 5 प्रमुख अंग (Component) है –

(1)	कब	-	(When)
(2)	कहाँ	-	(Where)
(3)	किसका	-	(Whome)
(4)	किनसे	-	(Between)
(5)	क्या	-	(What)

औद्योगिक विवाद कैसे उठाये जाय – इसके, मोटे तौर पर निम्न विधि है –

(1) जो पीड़ित श्रमिक है उसे सादे कागज पर एक आवेदन प्रबंधन को देना होगा और उसकी प्रतिलिपी आवश्यक कार्यवाही हेतू सम्बन्धित युनियन को महामंत्री को देना होगा।

(2) 7 दिन से 15 दिन के अन्दर प्रबंधन कोई कार्यवाही नहीं करती या की गयी कार्यवाही से आवेदक श्रमिक संतुष्ट नहीं है तो युनियन को उसके द्वारा उठाये गये विवाद की पूरी जाँच पड़ताल करनी चाहिए और तब उक्त श्रमिक के आवेदन पत्र एवं विवाद का उल्लेख करते हुए शीघ्र निपटारा हेतू प्रबंधक को आवेदन करना चाहिए ।

(3) युनियन द्वारा उठाये गये विवाद पर यदि प्रबन्धन एक (1) महीना के अंदर फैसला नहीं करती या उसके फैलने से श्रमिक और युनियन संतुष्ट नहीं, तो अब उक्त विवाद को युनियन, सरकार द्वारा नियुक्त श्रमायुक्त के समझ उठायेगी । यहाँ से श्रमायुक्त को अधिकार (धारा 12 के अन्तर्गत) समझौता अधिकारी (Concilliation officer) की हो जाती है ।

समझौता अधिकारी (Concialiation officer) की भूमिका

अध्याय **IV (Chapter IV)** धारा 12 के अन्तर्गत समझौता अधिकारी कार्यवाही निम्न प्रकार से करता है :–

धारा– 12 I के अन्तर्गत समझौता अधिकारी यह देखेगा कि उठाया गया मुद्दा औद्योगिक विवाद के रूप में वर्तमान है तो उस पर कार्यवाही प्रदत्त (Prescribed) तरीके से करेगा ।

धारा– 12 II समझौता अधिकारी समझौता हेतु, बिना विलम्ब के, उक्त विवाद जॉच पड़ताल करेगा एवं सभी संबंधित कागजातों का जॉच कर उभय पक्ष को प्रभावित करेगा ताकि कोई साफ (Fair) समझौता हो सके ।

धारा– 12 III यदि कोई समझौता हो जाता है तो उसकी सूचना सरकार को देगा तथा समझोता प्रतिलिपि उभय पक्ष को देगा ।

धारा– 12 IV यदि कोई समझौता नहीं होता है तो वह उक्त विवाद पर की गई पूरी कार्यवाही एवं समझौता नहीं हो सकने के कारण के बारे में सरकार को अवगत करायेगा ।

धारा– 12 V यदि सरकार उक्त विवाद के सम्बंध में उपरोक्त पाये रिपोर्ट पर संतुष्ट है तथा समझती है कि उक्त विवाद में Merit है तो वह उसे श्रम न्यायलय या ट्रिब्युनल में फैसला हेतु भेज देगी।

धारा– 12 VI समझौता वार्ता शुरू होने के 15 दिन के अन्दर ही एक रिपोर्ट समझौता अधिकारी को सरकार का देना होगा ।

अध्याय III (Chapter III) – के धारा 10 के अर्न्तगत ही सरकार श्रमिक न्यायलय बोर्ड अथवा ट्रिब्युनल को उक्त विवाद पर निश्चित अवधि में निर्णय हेतु आदेश भेजेगी जो प्रायः राज्यपाल द्वारा किया जाता है ।

अध्याय VII – धारा 33 (C) – यदि नियोजक देय राशि का भुगतान श्रमिक हो नहीं करता है तो उक्त श्रमिक श्रम न्यायालय को अदायगी हेतु मामला उठा सकता है ।

कार्य से मुअतल – (Dismissed) – श्रमिक अपना मामला बिना किसी युनियन के सहयोग से स्वयं भी अपना औद्योगिक विवाद उठा सकता है ।

औद्योगिक विवाद निष्पादन हेतू संक्षेप में यही श्रमकानून है ।

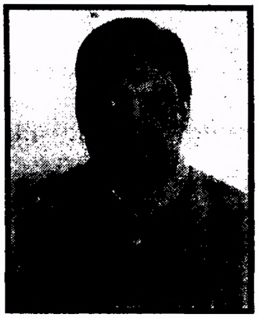

आदित्य साहु

महामंत्री, भारतीय मजदूर संघ

झारखण्ड प्रदेश

भारतीय मजदूर संघ के बढ़े चरण

भारतीय मजदूर संघ की स्थापना 23 जुलाई 1955 को हुई । इससे पूर्व एटक का गठन 31 आक्टूबर, 1920 को हुआ जिसमें कुल 64 यूनियन तथा 184584 सदस्यता थी, इसके बाद इण्टक का गठन 3 मई 1974 को हुआ जिसके तहत 200 यूनियन तथा 575000 की सदस्यता थी, एच0 एम0 एस0 का गठन 24 दिसम्बर, 1948 को हुआ जिसके तहत इसे 119 यूनियन तथा 103790 सदस्यता प्राप्त हुआ, यू0 टी0 यू0 सी लेनिन सारिणि का गठन 30 अप्रैल, 1949 को हुआ तथा इ से 254 यूनियन एवं 331991 सदस्यता प्राप्त हुए थे सभी संगठन पहले से श्रमिक क्षेत्र में कार्य कर रहे थे और यह सभी संगठन राजनीति से जुड़े थे तथा पूर्णतया पाश्चात्य मान्यताओं के आधार पर चल रहे थे । अन्तर्राष्ट्रीय श्रम दिवस पहली मई को भारत के मजदूरों का श्रम दिन मानकर मना रहे थे । सभी संगठन मजदूरों को एक निरीह सर्वहरा प्राणी मानते थे । इनके विचारों से श्रम जगत में केवल मालिक और मजदूर दो ही पक्ष हैं जबकि मजदूर सर्वहारा नहीं राष्ट्र निर्माता है । मजदूर एक वर्ग नहीं बल्कि समाज का अभिन्न अंग है । भारतीय मजदूर संघ इन सभी विसंगतियों को दूरकर राष्ट्रहित चौखट के अन्दर मजदूर संघ का कार्य प्रारंभ किया । मजदूर क्षेत्र में मजदूरों के दिन के रूप में आदि श्रमिक भगवान विश्वकर्मा की जयन्ती धूमधाम से मनाना प्रारंभ किया जो आज देश के कोने–कोने में मनाई जा रही है । शून्य से प्रारंभ भारतीय मजदूर संघ ने सृष्टि तक पहुंचने का प्रयास किया ।

प्रथम पहचान

20 अगस्त 1963 को भारतीय मजदूर संघ अन्य संगठनों के साथ संयुक्त रूप से बम्बई में होने वाली हड़ताल में शामिल होकर अपनी पहचान बनाई । आधारवर्ष 1960 के मूल्य सूचकांक में त्रुटियां थी । इसका लिंकिंग फैक्टर (गुणक सूत्र) गलत था जिसके परिणाम स्वरूप मंहगाई भत्ता कम हो गया था । आन्दोलन के कारण लकड़ा वाला समिति बनी उनकी जांच के परिणाम से गुणक सूत्र में सुधार हुआ । मजदूरों के महंगाई भत्ते में वृद्धि हुई । तत्पश्चात मद्रास, कलकत्ता, कानपुर और अहमदाबाद के लिए अलग–अलग समितियां बनी गुणक–सूत्र में सुधार हुआ तथा मजदूरों के मंहगाई भत्ते में आई कमी की क्षति पूर्ति हुई। तथा वर्ष 199 में पालधाट की राष्ट्रीय कार्य समिति की बैठक में लोगों को रोजगार मीले ऐसा रोजगारमूलक प्रस्ताव पारित किया गया ।

प्रथम अधिवेशन

12–13 अगस्त 1967 को दिल्ली में भारतीय मजदूर संघ का प्रथम अधिवेशन समपन्न हुआ । मा0 दत्तोपन्त ठेगड़ी जो 12 वर्षों तक संयोजक के रूप में कार्यरत रहे प्रथम महामंत्री बनाये गये ।

महामहिम राष्ट्रपति को ज्ञापन

29 अक्टूबर 1969 को भारत के मजदूरों को राष्ट्रीय मांग पत्र उस समय के राष्ट्रपति महामहिम वी0वी0 गिरि को विभिन्न क्षेत्र के मजदूरों के संबंध में दिया । इसी ज्ञापन में देश के समस्त वेतन भोगी कर्मचारिंं को बतौर विलम्बित वेतन बोनस दिये जाने की मांग की गई थी जिसकी अन्य श्रमिक संगठनों ने यह कह कर आलोचना की कि भारतीय मजदूर संघ अभी बच्चा है वह श्रम समस्याओं से पूर्णतया अनभिज्ञ है–भला केन्द्रीय कर्मचारियों को कैसे बोनस मिलेगा ? संयोग से उसी समय सर्वोच्च न्यायालय ने बंगलोर नगर महापालिका के सिबर में काम कर रहे कर्मचारियों को बतौर विलम्बित वेतन बोनस दिये जाने का फैसला दिया । तब सबकी आंखें खुली की सबको बोनस मिल सकता है ।

रेल कर्मचारियों की हड़ताल

9 मई 1974 को रेल कर्मचारियों की देश व्यापी हड़ताल हुई । भारतीय मजदूर संघ इस हड़ताल में शमिल था । इसमें रेल कर्मचारियों को बोनस दिया जाय की मांग जुड़ी थी । रेल मंत्री ललित नारायण मिश्र ने अपने रेल के कार्यकत्ताओं को बुलाकर कहा कि आप सब हड़ताल से अलग हो जायें तो हम भारतीय रेल मजदूर संघ को मान्यता दे देंगे । भारतीय रेल मजदूर संघ के कार्यकर्त्ता प्रलोभन में नहीं आये हड़ताल में शामिल रहे । अन्त में जार्ज फर्नान्डीस जो इस हड़ताल के संयोजक थे और जेल में थे उन्होंने मा0 ठेगड़ी जी को पत्र लिखा कि हड़ताल लम्बी खिंच गई है और कोई समाधान नहीं निकल रहा है। हम आपको अधिकार देते हैं कि सभी संगठन जो हड़ताल में शामिल हैं के प्रतिनिधियों से बात करके किसी निर्णायक स्थिति में पहूंचे । अन्त में 27 मई को हड़ताल वापस हो गई । जेल में बन्द कर्मचारी बाहर आये। हजारों कर्मचारी जिनकी सेवायें समाप्त कर दी गई थीं वे काम पर वापस आये किन्तु 127 कर्मचारी अधिक दिनों तक काम से बाहर रहे । अलग–अलग 2–3 वर्ष में सेवा लिये गये ।

अपातकाल समाप्ति भारतीय मजदूर संघ का एच एम एस में विलय का प्रस्ताव ।

26 जून, 1975 को भारत में इन्दिरा गांधी ने आपातकाल लागू किया । हजारों लोग जेल में डाल दिए गये । मजदूरों के बोनस में कटौती हो गई । भारतीय मजदूर संघ ने 26 अगस्त, 1975 को बोनस की कटौती वापस लेने और आपात स्थिति समाप्त किये जाने की मांग को लेकर आन्दोलन किया, द्वार सभायें की और प्रदर्शन करके गिरफ्तारी दी । कई माह तक कार्यकर्त्ता जेल में बन्द थे कुछ तो करीब 22 माह तक जेल में रहे । उस समय अपने को जुझारू और लड़कू कहने वाली यूनियनें आन्दोलन से गायब थीं एटक सरकार का समर्थन कर रहीं थी । बी0 एम0 एस0 का हिन्द मजदूर सभा में विलय का प्रस्ताव वर्ष 1978 में जनता पार्टी शासन में आया था जनसंघ का जनता पार्टी में विलय हो गया था । श्री मधुलिमय ने सोचा कि बी0 एम0 एस0 का विलय एच0 एम0 एस0 में हो जाये । उन्होंने ठेगड़ी जो को एक पत्र लिखकर विलय के लिये आग्रह किया था । ठेगड़ी जी ने उन्हें पत्र लिखकर कहा कि Marry in haste repeant in Leisure and rest. जब यहां बात नहीं बनी तो श्री मोहन धारिया के यहां मा0 बाला साहब देवरस को चाय पर आमंत्रित किया गया । मोहन धारिया ने भी विलय का प्रस्ताव रखा।

मा0 बाला साहब ने यह कहकर कि संगठन स्विच आन और स्विच ऑफ की तरह नहीं चलते हैं बात समाप्त कर दी ।

आर्थिक गुलामी की चेतावनी

भारतीय मजदूर संघ ने वर्ष 1982 में यह कहा कि भारत आर्थिक गुलामी की ओर बढ़ रहा हैं यह भारत के लिए दूसरा स्वतंत्रता संग्राम होगा । यह युद्ध अस्त्र–शस्त्र से नहीं लड़ा जायेगा । इसका प्रमुख अस्त्र होगा आर्थिकता । साथ में यह भी नारा दिया कि "स्वदेशी अपनाओं भारत को आर्थिक गुलामी से बचाओ" ।

गैर राजनीतिक श्रम संगठन को विश्व स्तर पर मान्यता

भारतीय मजदूर संघ ने जब गैर राजनीतिक श्रम संगठन की बात कहा तो अन्य श्रम संगठनों को आश्चर्य हुआ। नवम्बर 1990 में रूस की राजधानी मास्कों में आल वर्ल्ड ट्रेड यूनियन कान्फ्रेंस हुई जिसमें 133 देश की 400 यूनियनों से 1350 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था । भारतीय मजदूर संघ से श्री जी0 प्रभाकर ने भाग लिया था । कान्फ्रेंस में शामिल सभी प्रतिनिधियों ने गैर राजनीतिक श्रम संगठन के समर्थन में एक प्रस्ताव पारित किया । सम्मेलन में लाल झण्डा उतार कर स्वेत ध्वज फहराया । स्मरण रहे कि इससे 38 दिनपूर्व रूस के सभी श्रम संगठन एकत्रित हुये थे । उन्होंने राजनीतिक मोर्चे को खारिज कर एक नया महासंघ बनाया था जो गैर राजनीतिक था ।

भूत लिंगम कमेटी की रिपोर्ट

जनता पार्टी के शासन काल में भूतलिंगम कमेटी की रिपोर्ट आई थी । 1981 में सभी श्रम संगठनों ने मिलकर नेशनल कम्पेन कमेटी का गठन किया था । भूतलिंगम कमेटी की रिपोर्ट का खुलकर विरोध किया। साथ ही ESMA और NSA कानून का विरोध किया । देशव्यापी आन्दोलन धरना और प्रदर्शन हुए । कुछ कारण बस NCC टूट गई और भारतीय मजदूर संघ ने तय किया कि आगे अकेले अपने बल पर आन्दोलन करेगे जो आजतक जारी है किंतु आद्योगिक महासंघों को उद्योग स्तर पर संयुक्त मोर्चा बनाने की इजाजत दे रखा है ।

भारती मजदूर संघ द्वारा निर्धारित विशेष नीतियां विदेशी तकनीक

इस सम्बन्ध में 4 बातें हैं ।

(1) यह कि जो विदेशी तकनींक हमारे अनुकूल है उसे ज्यों का त्यों स्वीकार करना अर्थात् Adopt करना ।

(2) जिस तकनीक का कुछ उपयोग है और उसमें से कुछ त्याज्य है तो उसे Adapt करना ।

(3) वैसे तकनीक जो अपने देश के अनुकूल नहीं है और पूरी की पूरी हानिकारक है उसे Reject करना ।

(4) कुछ ऐसी तकनीक जो हमारे लघु उद्योग कुटीर एवं घरेलू उद्योगों के अनुकूल विदेशों में नहीं बन सकती उसे प्रयत्न पूर्वक अपने देश में तैयार करना अर्थात् Evolve करना ।

राष्ट्रीय तकनीक

इस नीति के अन्तर्गत अलग–अलग उद्योगों के स्वरूप पर विचार होना चाहिए । तकनीक का सम्बन्ध केवल मालिक और मजदूर से है यह कहना उचित नहीं है । यह तो नई रचना और संस्कृति है। देश के दक्ष लोगों को एक साथ लेकर राष्ट्रीय तकनीकी नीति बनाई जाये ।

विश्वकर्मा सेक्टर

ऐसे लोग जो न मजदूर हैं और न मालिक वे श्रम कर के अपनी जीविका उपार्जन करते हैं। रिक्सा चलाना, जूता बनाना, कुम्हार द्वारा मिट्टी के बर्त्तन बनाना, बढ़ई और लोहार आदि द्वारा अपना काम करना और रोजी रोटी कमाना ऐसे लोगों को विश्वकर्मा सेक्टर में लाने का काम सर्व प्रथम भारतीय मजदूर संघ ने किया। अब चीन ने भी इसे स्वीकार किया है ।

डंकल प्रस्ताव का विरोध

डंकल मजदूर संघ ने सर्वप्रथम 20 अप्रैल 1993 को लाल किया मैदान में विशाल रैली का डंकल प्रस्ताव का विरोध किया ।

विश्व व्यापर संगठन के विरूद्ध विशाल रैली

16 अप्रैल 2001 को राम लीला मैदान में विशाल रैली का विश्व व्यापार संगठन का जबरदस्त विरोध किया। इस रैली के बार में न भूतों न भविष्यत की संज्ञा दी गयी ।

प्रदेश स्तर पर प्रदर्शन

सितम्बर 2002 में प्रदेशों में 38 स्थानों पर प्रदर्शन हुए जिसमें लाखों मजदूरों ने भाग लिया ।

वर्ष 2003 में जुलाई एवं अगस्त माह में 400 जिला स्तरों पर प्रदर्शन हुए ।

कन्द्रीय श्रम संगठनों की सदस्यता का सत्यापन

वर्ष 1980 को आधार वर्ष मानकार केन्द्रीय श्रम संगठनों का सदस्यता सत्यापन हुआ जिसमें भारतीय मजदूर संघ को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ पुनः 1989 को आधार वर्ष मानकर सदस्यता सत्यापन हुआ जिसमें भारतीय मजदूर संघ को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ । अब तीसरी बार केन्द्रीय संगठनों की सदस्यता सत्यापन का कार्य वर्ष 2002 के आधार पर प्रारंभ है । ऐसी सम्भावना है कि इस बार के सत्यापन में भी भारतीय मजदूर संघ को प्रथम स्थान प्राप्त होगा ।

निःसन्देह भारतीय मजदूर संघ का कार्य बिलम्ब से प्रारंभ हुआ किन्तु प्रखर राष्ट्रवादी संगठन के नाते देश के मजदूरों ने इसे स्वीकार किया है । इस कारण से इसके कार्य में निरन्तर वृद्धि हो रही है और स्व0 दत्तोपंत ठेंगड़ी की प्रेरणा और दिये गये मार्गदर्शन से भारतीय मजदूर संघ राष्ट्र को परम वैभव के शिखर पर ले जाने में सफल होगी ।

सीताराम सिंह

प्रभारी

भारतीय मजदूर संघ

भारत सरकार, श्रम मंत्रालय द्वारा बीड़ी श्रमिकों हेतु संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं

1. स्वास्थ्य संबंधी योजनाएँ । 2. शिक्षा संबंधी योजनाएँ । 3. आवास संबंधी योजनाएँ। 4. सामाजिक सुरक्षा योजनाएं । 5. मनोरंजन संबंधी योजनाएँ

स्वास्थ्य सम्बन्धी योजनाएँ

1. ***स्थायी–सह–चलित औषधालय खोलने की योजना:***

   योजना के अन्तर्गत बीड़ी श्रमिकों की संख्या 5000 होने पर स्थायी :– सह–चलित तथा 3000 परंतु 5000 से कम होने पर स्थायी या चलित औषधालय खोलने का प्रावधान श्रमिक तथा आश्रितों को मुफ्त चिकित्सा सुविधा ।

2. ***प्रसूति लाभ योजना :***

   प्रथम दो प्रसव तथा महिला बीड़ी श्रमिकों को 500/– रू. की दर से अनुदान देय भुगतान मनीआर्डर द्वारा किया जाता है ।

3. ***परिवार नियोजन ऑपरेशन योजना :***

   श्रमिकों को 2 बच्चों के बाद परिवार नियोजन ऑपरेशन कराने पर रूपये 200/– अनुदान । इस योजना का लाभ जीवन में एक बार पति या पत्नी द्वारा लिया जा सकता है ।

4. ***चश्मे की राशि के भुगतान की योजना :***

   श्रमिकों को चश्मा खरीदने पर 150/– रू. तथा लैंस हेतु 20/– रू. प्रति श्रमिक देय । इस योजना का लाभ सिर्फ बीड़ी श्रमिकों को ही प्रदान किया जाता है उनके आश्रितों को नहीं ।

5. ***ह्रदय रोग एवं किडनी के इलाज की योजना :***

   योजनांतर्गत ह्रदय रोग के इलाज के लिए अधिकतम 1,30,000/– तथा किडनी के इलाज के लिए अधिकतम रू. 2,00,000/– देय । 9 माह तक 750/– रू. से 1,000/– रू. तथा निर्वाह भत्ता देय। इलाज प्रारंभ करने से पूर्व कल्याण आयुक्त से अनुमति लेना आवश्यक है ।

6. ***घर पर ही क्षय रोग के इलाज की योजना :***

   दवाइयों के खर्च हेतु 50/– रू. प्रतिमाह तथा 9 (नौ) माह तक 600/– रू. से 750/– रू. तक निर्वाह भत्ता देय ।

7. ***कैंसर के इलाज की योजना –***

   इलाज हेतु संपूर्ण आर्थिक सहायता / इलाज किसी मान्यता प्राप्त कैंसर अस्पताल से लिया जाना चाहिये।

   निर्वाह – भत्ता रू. 600/– से रू. 750/– नौ माह तक देय तथा रोगी एंव एक अटेंडेंट को यात्रा–भत्ता एवं रू. 50/– प्रतिदिन प्रतिव्यक्ति देय । इलाज पूर्व कल्याण आयुक्त की पूर्व अनुमति आवश्यक है ।

8. ***कुष्ठ रोग उपचार की योजना –***

   आन्तरिक रोग के इलाज की सुविधा होने पर प्रतिदिन रू0 30/–

– या कुल व्यय तथा बाह्य रोगी इलाज के लिए प्रतिदिन रू0 6/–

– या कुल व्यय जो कम हो देय । निर्वाह भत्ता के 200/– से 300/– नौ माह तक श्रमिक को देय।

9. ***मानसिक रोग के उपचार की योजना:***

मान्यता प्राप्त अस्पताल में मानसिक रोग का इलाज की व्यवस्था है । राजकीय शैयाओं के लिए 180/– रूपये प्रतिमाह, तृतीय श्रेणी के लिए स्वतन्त्र शैया के लिए 900/– रूपये प्रतिमाह 6 माह तक देय। रोगी के आश्रितों को 600/– रू0 प्रतिमाह नौ माह तक निर्वाह भत्ता देय ।

10. ***क्षय रोग अस्पताल में बिस्तरों आरक्षण की योजना:***

रोगी श्रमिकों को 9 (नौ) माह तक मुफ्त चिकित्सा तथा इस अवधि के लिए रू. 600/– से रू. 750/– तक निर्वाह भत्ता रू. 10/– प्रतिदिन खुराक भत्ता या प्रति वर्ष प्रति रोगी रू0 20000/– अनुदान देय।

शिक्षा संबंधी योजनाएँ

शिक्षा सम्बन्धी वित्तीय लाभ निम्नलिखित दर पर दिये जाते हैं ।

कक्षा	प्रकार	संशोधित	
		छात्राएँ	छात्र
कक्षा 1 से 4 तक	ड्रेस, स्लेट, पुस्तकें	250	250
कक्षा 5 से 8 तक	वित्तीय सहायता	940	500
कक्षा 9	वित्तीय सहायता	1140	700
कक्षा 10	वित्तीय सहायता	1840	1400
कक्षा 11 से 12 तक पी.यू.सी. 1 तथा पी.यू.सी. 2	वित्तीय सहायता	2440	2000
स्नातक/तीन वर्षीय डिप्लोमा	वित्तीय सहायता	3000	3000
व्यावसायिक डिग्री (वी.ई./एम.बी.बी.एस./ बी.एस.सी.कृषि	वित्तीय सहायता	8000	8000

आवास सम्बन्धी योजनाएँ

1. ***एकीकृत आवास योजना –***

(अ) जिन बीड़ी श्रमिकों के पास अपनी जमीन या अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ संयुक्त रूप से जमीन है, वांछित प्रपत्रों के साथ आवेदन करने पर रू. 40,000/– अनुदान 3 किस्तों में देय ।

(ब) राज्य सरकार द्वारा पूर्ण प्रस्ताव आने पर 20.000 प्रति भवन अनुदान देय ।

(स) पंजीकृत आवासीय समिति जो बीड़ी श्रमिकों द्वारा बनाई गई हो, का पूर्ण प्रस्ताव आने पर रू. 20,000/– प्रति भवन अनुदान देय ।

(द) पुराने आवास की मरम्मत हेतु रू. 5000/– अनुदान देय ।

2. बीड़ी श्रमिकों की सहकारी संस्थाओं को वर्क–शेड एवं गोदाम निर्माण हेतु आर्थिक सहायता ।

योजनान्तर्गत रू. 1,50,000/– या कुल व्यय (लागत) का 75 प्रतिशत जो भी कम हो 3 किस्तों में देय।

सामाजिक सुरक्षा योजना

1. **समूह बीमा योजना –**

योजनान्तर्गत बीड़ी श्रमिक की स्वाभविक मृत्यु होने पर रू. 10,000 (01.04.2004 से लागू) तथा दुर्घटना में मृत्यु होने पर रू. 25,000/– वांछित दस्तावेजों के साथ आवेदन करने पर देय । अंग क्षतिगस्त होने पर भी योजना लाभ । निःशुल्क बीमा लाभ ।

मनोरंजन सम्बन्धी योजनाएँ

1. **चलचित्र प्रदर्शन –**

बीड़ी श्रमिक बाहुल्य क्षेत्रों में संगठन द्वारा निःशुल्क चलचित्र का प्रदर्शन ।

2. **टेलिविजन सेट प्रदान करने की योजना ।**

रंगीन टी.वी. क्रय हेतु रू. 10,000/– तथा ब्लैक एण्ड व्हाईट टी. वी. क्रय हेतु रू. 4,000/– प्रदान करने ।

3. **खेलकूद/सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजन की योजना –**

उक्त प्रयोजन हेतु प्रबंधन द्वारा किये गये कुल व्यय का 50 प्रतिशत या अधिकत्तम 2000/– प्रतिवर्ष खर्च करने का प्रावधान । जहाँ 10000/– बीड़ी श्रमिक हो, आयोजन करने पर एक क्षेत्र के लिए 10000/– खर्च करने का प्रावधान है ।

4. **हॉली–डे हाम योजना (पुरी, उड़ीसा) ।**

बीड़ी श्रमिक या संगठन को आने–जाने हेतु द्वितीय श्रेणी रेल कियायामय आरक्षण, पूरी से प्रति श्रमिक चार्ज तथा हॉली–डे होम पूरी में 3 दिन तक निःशुल्क ठहरने की सुविधा ।

5. **वीड़ी श्रमिकों की आवासीय कॉलोनी में सामुदायिक केन्द्र के निर्माण हेतु सहायता योजना ।**

योजना के अन्तर्गत सामुदायिक केन्द्र के निर्माण हेतु अधिकतम रू. 1,00,000/– तक का अनुदान देय।

"सर्व पंथ समादर मंच"

एक परिचय

सर्व पंथ समादर मंच की स्थापना नागपुर में दिनांक 6 दिसम्बर 1993 को माननीय दत्तोपंथ ठेंगड़ी जी द्वारा किया गया । इसके पूर्व इन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, भारतीय मजदूर संघ, भारतीय किसान संघ स्वदेशी जागरण मंच की स्थापना किये । सभी की स्थापना का एक ही मकसद है देश को परम वैभव की शिखर तक ले जाना है ।

सर्व पंथ समादर मंच का प्रथम अखिल भारतीय सम्मेलन रेशम बाग, नागपुर में दिनांक 16, 17 अप्रैल 1994 को हुई । इसका उद्घाटन मौलाना वहीउद्दीन साहब ने किया, जो मंच के संरक्षक भी बने । इसके प्रथम अध्यक्ष नागपुर के जाल फिरोज जिमी एवं यहाँ महामंत्री माननीय आलम मीर और गौरी, इन्दौर को मनोनीत किया गया । इस सम्मेलन में पूरे देश से 280 प्रतिनिधि भाग लिए। दूसरा अधिवेशन दिनांक 11, 12 अप्रैल 1998 को पनकी परमल पावर स्टेशन कानपुर में हुई, जहाँ मेरठ के आचार्य हबीब, अध्यक्ष एवं माननीय आलम मीर गौरी, महामंत्री निर्वाचित हुए । तृतीय अधिवेशन दिनांक 10, 11 मई 2002 को हैदराबाद, आन्ध्रप्रदेश में सम्पन्न हुआ । जहां अखिल भारतीय खदान मजदूर संघ के श्री सी0 बी0 फ्रेंक को अध्यक्ष पद पर निर्वाचित किया गया ।

सर्व पंथ समादर मंच का कार्य देश के सभी प्रदेशों में चल रहा है । बिहार प्रदेश में प्रथम सम्मेलन दिनांक 01 मार्च 1998 को स्टाफ क्लब, धनबाद में सम्पन्न हुआ । जिसमें मुख्य रूप से स्व0 राज कृष्ण भक्त एवं माननीय अखतर हुसैन जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ एवं बिहार प्रदेश कार्यकारिणी का गठन किया गया । प्रदेश अध्यक्ष माननीय मुमताज हुसैन एवं महामंत्री मुबारक हुसैन मनोनीत किये गये । बिहार से अलग होने के बाद झारखण्ड प्रदेश में सर्व पंथ समादर मंच का अधिवेशन दिनांक 25 मार्च 2003 को सामुदायिक भवन अरगडा, हजारीबाग में सम्पन्न हुआ । जिसमें प्रदेश अध्यक्ष जोगेन्दर सिंह जग्गी एवं महामंत्री मुबारक हुसैन निर्वाचित किये गये । साथ ही शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी जी का शहीद दिवस मनाया गया ।

गणेश शंकर विद्यार्थी जी का जन्म 1890 में नाना के घर प्रयाग में हुआ था । मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतू इलाहाबाद आ गये तथा कांग्रेस के सक्रिय सदस्य के रूप में काम करने लगे । वर्ष 1925 में कानपुर के कपड़ा मिल के मजदूरों के आन्दोलन का नेतृत्व किया । 25 मार्च 1937 को हिन्दू – मुस्लिम साम्प्रदायिक दंगे में हिन्दू एवं मुसलमानों को बचाने एवं सुरक्षित स्थान में पहुँचाने के क्रम में वे शहीद हो गये । इसलिए प्रत्येक वर्ष 25

मार्च को सर्व पंथ समादर मंच द्वारा गणेश शंकर विद्यार्थी जी का बलिदान दिवस मनाते हैं । उनके बलिदान से हमें संदेश मिलता है कि वास्तव में केवल हिन्दू – मुस्लिम में नही, विभिन्न सम्प्रदायों में भी कुछ स्थायी एकता निर्माण करनी हो तो वह केवल भाषणों से नही होती, प्रचार से नहीं होती, टी0 वी0, रेडियो, समाचार पत्रों से नहीं होती । जब उस एकता के लिए आत्म बलिदान करने वाले ईमानदार लोग तैयार होंगे तभी एकता हो सकती है । यह संदेश उनके जीवन से हमें मिलता है। इसलिए हम शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी जी का बलिदान दिवस को सर्वपंथ एकता दिवस के रूप में मनाते हैं।

सर्व पंथ समादर मंच का कहना है कि हिन्दुस्तान के संदर्भ में युनिटी शब्द का प्रयोग उचित नहीं है । युनिटी शब्द से प्रतीत होता है एक से अधिक युनिट का अस्तित्व है । हमारा कहना है कि हिन्दु–मुसलमान दो युनिट नहीं है, एक ही युनिट है और एक ही के बीच झगड़े हैं। जैसे मुसलमानों में झगड़ा हैं, इराक व ईरान का झगड़ा, इराक और कुर्द का झगड़ा, सिया और सुन्नी का झगड़ा होता है । उसी तरह हिन्दुओं में भी झगड़े होते हैं । जैसे जाट और गुर्जर का झगड़ा, ब्राह्मण ठाकुर के विरूद्ध बैकवर्ड क्लास का झगड़ा चलता है । झगड़े क्यों हैं ? सारे हिन्दु एक हैं क्या ? सारे मुसलमान एक हैं क्या ? आप हम हिन्दु मुसलमान एकता की बात करते हैं। सारे मुसलमान भी एक है क्या ?

राजनेता लोग अपने स्वार्थ के लिए झगड़े लगाते हैं । केवल हिन्दु–मुसलमान में ही झगड़ा नहीं है । बैकवर्ड–फारवर्ड में भी है । दलित – स्वर्ण में भी है । तरह–तरह के झगड़े राजनेता अपने स्वार्थ के लिए एवं अपनी गद्दी के लिए करते हैं । यह भी उसी का एक भाग है । यह स्वतंत्र और अलग प्रश्न नहीं है । जब सम्पूर्ण समाज एक है तो Not the unity but one men एकता नहीं अपितु एकरसता, एकात्मता होनी चाहिए । यही सर्व पंथ समादर मंच की भूमिका है। और झारखण्ड प्रांत हो नही सम्पूर्ण राष्ट्र और मानव समाज को हम इस संगठन के माध्यम जोड़ेंगे। **यह संकल्प हमारा है ।**

मुबारक हुसैन
महामंत्री
सर्वपंथ समादर मंच
झारखण्ड प्रदेश

रामचन्द्र गोप
संगठन मंत्री

आंगनबाड़ी कर्मचारी संघ झारखण्ड प्रदेश

राजवंश सिंह
संरक्षक

एक परिचय

आंगनबाड़ी कर्मचारी संघ, झारखण्ड प्रांत में भारतीय मजदूर संघ की प्रेरणा और मार्ग दर्शन में कार्यरत है, भारतीय मजदूर संघ की वह निति की समाज के शोषित पिडित दलित जनो के लिए काम करना समाज के प्रति सर्म्पण भाव हो इसके लिए कार्यकत्ताओं तथा समाजसेवीओं को जोड़ते हुए संगठन कार्य विस्तार करना ताकि माँ भारती को परम वैभव के शिखर पर ले जाया जा सके इसी क्रम में भारतीय मजदूर संघ, झारखण्ड प्रदेश ने चिंतन क्रिया की अगर आंगनबाड़ी की सेविकाओं एवं सहायिकाओं को एक सूत्र में संगठन के माध्यम से जोड़ा जाये तो समाज के सबसे निचले तबके तक हम अपनी विचारधारा को ले जा सकते है तथा आंगनबाड़ी में काम करने वाली बहने जिनका आर्थिक शोषण किया जा रहा है उनको भी उनकी हक दिलाने मे हम सार्थक होंगे और इसी कार्य को आगे बढ़ाने हेतु लोहरदगा मे श्री राजवंश सिंह के नेतृत्व मे पहली आंगनबाड़ी सेविकाओं की एक बैठक गुमला जिला के घाघरा प्रखण्ड स्थित विद्यालय में 12 अक्टूबर 2000 को आयोजित किया गया तथा भारतीय मजदूर संघ की विचारधारा बहनो को बताया गया तथा संगठन के रजिस्ट्रेशन कराने हेतू आवश्यक कार्यवाही की गयी तथा पहला महामंत्री पद का दायित्व श्रीमती बालोमणि बाखला, लोहरदगा को बनाया गया वर्ष 2002 में संगठन का रजिस्ट्रेशन (पंजीयन) श्रम मंत्रालय/रजिस्ट्रार श्रम संगठन, झारखण्ड द्वारा हुआ और आज यह संगठन, एक पंजीकृत संगठन के रूप में झारखण्ड में कार्यरत है इस संगठन का प्रथम प्रांतीय अधिवेशन नगर भवन राँची में दिनांक 13 नवम्बर 2003 को हुआ जिसमे करीब 3000 बहनों ने प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया इस अधिवेशन को मा0 ओम प्रकाश आघी, राष्ट्रीय संगठन मंत्री, भारतीय मजदूर संघ, श्री राजवंश सिंह, संरक्षक आंगनबाड़ी कर्मचारी संघ, श्री आदित्य साहू, प्रदेश महामंत्री, श्रीमती सुचित्रा महापात्र, अखिल भारतीय आंगनबाड़ी कर्मचारी महासंघ ने सम्बोधित किया, आज करीब 10000 बहने इसकी सदस्य है तथा प्रदेश के लोहरदगा, गुमला, सीमडेगा, चतरा, हजारीबाग, पूर्वी सिंहभूम, देवघर, साहेबगंज, राँची, पलामू, गढ़वा, लातेहार, ई0 जिलो में सेविका बहने इसकी सदस्य बन चूकि है, भारतीय मजदूर संघ के प्रयास से सेविका बहनो को 1 अप्रैल 2002 से 500 रू0 एक मुस्त केन्द्र सरकार द्वारा मानधन मे बढ़ोत्तरी कराया गया तथा भारतीय मजदूर संघ के प्रयास से ही झारखण्ड सरकार 250/रू0 प्रतिमाह सेविका को तथा 100 रू0 सहायिका के मानधन मे अन्तिरिक्त बढ़ोत्तरी करवाया गया तथा सेविका बहने जो [illegible] सरकार कर्मियों के शोषण का शिकार थी आज भामसंघ के कारण एक शक्ति बनकर [illegible] नारा है **"हम भारत की नारी है, हम फुल नही चिंगारी हैं"** आगे इनकी अनेक [illegible] है जिसके लिए भारतीय मजदूर संघ संघर्षरत है, हम सभी मीलकर इस समस्याओं का समाधान करेंगे स्व0 दन्तोपंत ठेंगड़ी का मार्गदर्शन हमारे पास है सेविका बहनों की शक्ति और भारतीय मजदूर संघ के प्रेरणा और मार्गदर्शन राष्ट्र के नवनिर्माण मे सहयोग करेगा ।

।। भारत माता की जय ।।

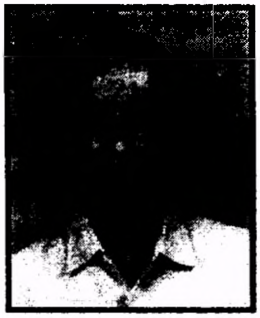

दामोदर प्रसाद
कार्यसमिति सदस्य
भारतीय मजदूर संघ

आर्थिक एवं औद्योगिक सुधार तथा श्रमिकों के समक्ष चुनौतियाँ

उदारीकृत अर्थ व्यवस्था तथा बाजार का वैश्वीकरण आरम्भ होने के बाद श्रमिकों के समझ नई चुनातियाँ उभरकर सामने आयी है । भारत में जुलाई 1999 से आर्थिक सुधारों का प्रारम्भ होना श्री गणेश हुआ । आज हम अपनी अर्थ व्यवस्थ, उत्पाद व सेवा, को विश्व से जोड़ना चाहतें हैं । ये एक समस्या के साथ–साथ कठिन चुनौती है ।

सन् 1990–91 में भारत को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ा है । अन्य देशो की आर्थिक स्थिति का चरमराना, खाड़ीयुद्ध, तेल की किमतों में अप्रत्यासित वृद्धि भारत की नागरिकों की नाजुक आर्थिक स्थिति व राजनैतिक अस्थिरता इन सबों ने भारत की अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर उसकी उधार चुकाने की क्षमता पर प्रश्न चिन्ह खड़ा कर दिया था । भारत में अप्रवासी भारतीयों में बैंकों में जमा धन राशि निकालनी प्रारम्भ कर दी, देश की सोना गिरवी रखा गया । आई0 एम0 एफ0 से ऋण लिया गया, यह सब देश की अर्थव्यवस्था की डगमगाने का ज्वलंत उदाहरण हैं । सन् 2000 के बाद भारतीय अर्थ व्यवस्था का असली चेहरा दिखाई देने लगा । पिछले एक दशक में सबसे ज्यादा निराशा का दौड़ बाजार में दिखाई दिया । औद्योगिक विकास की दर गिरती गई । सभी प्रकार के घाटे बढ़ते गये उद्योगपतियों के दवाब में भारत सरकार अधिक ऋण ले रही थी । निवेश अपेक्षा से काफी कम था ।

अप्रैल 2001 से मात्रात्मक प्रतिबन्ध समाप्त कर दिये गये । विदेशी समानों के आने के उपर लगे सभी प्रतिबंध लगभग समाप्त हो गया । प्रतियोगिता के युग में अच्छे प्रतिभागी बनने के योग्यता हो वो योग्यता यहाँ दिखाई नही देती है ।

श्रम मंत्रालय का ताजा आँकड़ा यह बताता है कि इस अर्थव्यवस्था में रोजगार/नौकरी निशाने पर है । हर स्तर पर रोजगार व नौकरी गिरावट की ओर है । वर्ष 2000 तक संगठित क्षेत्र में नौकरियों में 0.15 प्रतिशत कमी रही है । बड़े उद्योगें में अबतक लाखों नौकरियाँ कम हो गयी।

अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्र यथा वित्त सूचना, औद्योगिकक कुटीर उद्योग, लघु उद्योग, बैंक, बीमा आदि सभी स्थानों पर बंदी से बेरोजगारी बढ़ी है एवं छटनी का दौड चल रहा है । पिछले पाँच सालों में – 11 लाख से भी ज्यादा नौकरियाँ समाप्त हो गयी । अर्थव्यवस्था के सुधार में सरकार उद्योगपति, अर्थ शास्त्रों, श्रम संगठन आदि सेवा क्षेत्रों में मंदी से निकालने का रास्ता ढूढ रहें है । निराशा का वातावरण

है, ये अहम प्रश्न है । भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कृषि की स्थिति भी गंभीर है । ग्रमीण अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता आई है, सुरक्षित रखा गया लाखो टन अनाज सरकारी गोदामों में अपने बदहाली पर आँसु बहा रहा है, और आये दिन गरीब किसान मजदूर आत्म हत्या कर रहें हैं । हांलाकि श्री अटल बिहारी बाजपेयी के नेतृत्व में राजग सरकार पिछले पाँच सालों के कार्यकाल में प्रमुख सुधार कराया है जो निम्न प्रकार से परिलक्षित हो रहें हैं ।

अबतक बंद पड़े कई औद्योगिक क्षेत्र जैसे टेलीफोन, उर्जा, सुरक्षा व संरचना क्षेत्र (इन्फ्रास्ट्रन्चर) खोला गया जो केवल सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित थे ।

- विदेशी निवेशकों को निमंत्रण दिया गया । कुछ क्षेत्रों को छोड़कर । (जैसे कृषि, बागवानी)।
- विदेशी निवेश की सीमा 40 प्रतिशत से बढ़ाकर 51 प्रतिशत पुनः 75 प्रतिशत तक किया गया।
- विदेशी पूँजी निजी क्षेत्र को सड़क, पोर्ट, एयरपोर्ट एवं संचार क्षेत्र में अनुमति दी गयी ।
- विनिवेश के लिए अलग से मंत्रालय बनाया गया ।
- सेवी की और व्यापक अधिकार दिया गया ।
- श्रम कानूनों में सुधार की व्यापक योजना तैयार की गई खासकर औद्योगिक विवाद अधि ानियम में।
- छोटे किसानों के लिए एक वारगी निपटान योजना को एक वर्ष और बढ़या गया जो पच्चास हजार रूपये तक था ।
- अनाज का भंडार वर्ष 2003 में लगभग 6 करोड़ टन तक जमा हो गया ।
- विदेशी मुद्रा भंडार 90 अरब डालर तक हो गया । लघु उद्योग क्षेत्र में व्यापक सुधार दर्ज किया गया तथा प्रधानमंत्री सड़क योजना प्रभावी ढग से लागू किया गया ।

आर्थिक सुधारों के फलस्वरूप देश में उद्योग व अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

भारत में आर्थिक सुधारें का प्रभाव अर्थव्यवस्था पर व्यापक रूप से पड़ा

1. कारखाने व उद्योग लगातार बीमार हो रहें हैं । निराशा का वातावरण बन रहा है, बड़े स्तर पर छंटनी एवं ठेका प्रथा की प्रणाली को बढ़ावा दिया जा रहा है ।
2. विदेशी मुद्रा का आकूत भंडार यथा 90 अरब डालर होने के फलस्वरूप बाहरी ऋण चुकाने में

स्वदेशी को अपनाइए, विदेशी को ठुकराइए !

क्षमता बढ़ी है । कई क्षेत्रों में निर्यात बढ़ा है । देश में निर्मित सामानों/उत्पादों की गुणवक्ता बढ़ी है।

3. असंगठित क्षेत्र में काफी सुधार किया जा रहा है, आई0 टी0/कम्पूटर क्षेत्र में रोजगार का सृजन एवं लोगों को रोजगार काफी संख्या में मिला है ।

औद्योगिक सुधार एवं रोजगारों योजना की आवश्यकता

भारतीय अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने एवं औद्योगिक सुधार के साथ–साथ रोजरोन्मुखी योजना तैयार कर क्रियान्वयन की परम आवश्यकता है । कुछ महत्वपूर्ण योजनायें इस प्रकार तैयार करने की जरूरत है ।

1. उत्तरप्रदेश में नोयडा के तर्ज पर पूरे भारत में विकास केन्द्र खोले जायं एवं उन्हें विकसित किया जाय, ताकि मंदी पर काबू पाया जा सकें ।
2. वैज्ञानिक तरीके के खेती, उन्नत बीज एंव अच्छे नस्ल का पशुधन, सुविधा उपलब्ध कराना एवं बेहतर तरीकों से किसानों को अवगत कराया जाय ।
3. प्रत्येक वर्ष लाखों की संख्या में बेरोजगारों की फौज तैयार करने के वजाय रोजरोन्मुखी एवं अर्थमूलक शिक्षा का प्रावधान किया जाय ।
4. राज्यकोष घाटा कम करने के लिए कड़े एवं बेहतर उपाय की आवश्यकता है । नौकरशाही पर काबू करने की जरूरत है ।
5. रोजबार सृजन के लिए लोगों को प्रेरित किया जाय एवं स्वरोजगार के लिए बल दिया जाय। बिजली की मुहैया कराने में व्यापक सुधार किया जाय ।
6. विनिवेश की प्रक्रिया पर स्वस्थ्य बहस की जरूरत है, और सार्वजनिक क्षेत्र के ईकाईयों को लाभप्रद बनाने की कारगार योजना की जरूरत है ।

इस प्रकार आर्थिक व औद्योगिक विकास में मील का पत्थर साबित होगा । आईये संकल्प लें एक नये भारत का पुर्ननिर्माण का ।

''इति श्री''

हमारे कार्यक्रम

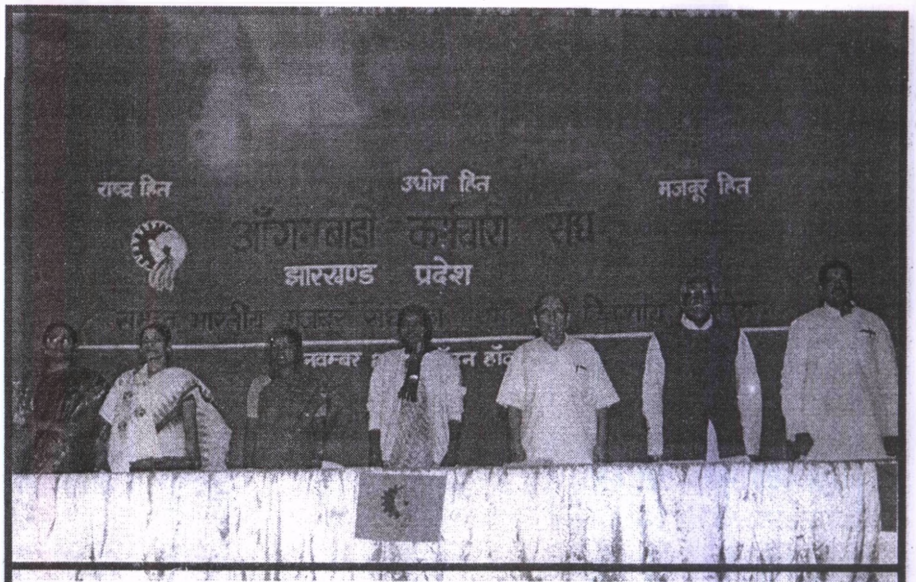

13 नवम्बर 2003 को आंगनबाड़ी कर्मचारी संघ के प्रथम अधिवेशन के अवसर पर टाउन हॉल रांची में मंच पर

1) श्री ओम प्रकाश अग्धी, राष्ट्रीय संगठन मंत्री, (2) श्री आदित्य साहू, प्रदेश महामंत्री, भामसंघ, झारखण्ड, (3) श्री राजवंश सिंह, संरक्षक आंगनबाड़ी कर्मचारी संघ, (4) सुश्री सुचित्रा महापात्र, महामंत्री आंगनबाड़ी महासंघ, (5) श्रीमती बालोमनी बाखला, महामंत्री आंगनबाड़ी कर्मचारी संघ, (6) श्रीमती फुलमती देवी, अध्यक्ष आंगनबाड़ी कर्म0 संघ।

13 नवम्बर 2003 को आंगनबाड़ी अधिवेशन में बैठे सेविकाऐं/सहायिकाऐं

स्थानः रांची नगर भवन

13 नवम्बर 2003 को आंगनबाड़ी कर्मचारी संघ के प्रथम अधिवेशन, रांची में पथ संचालन का नेतृत्व करते ।

(1) श्री आदित्य साहू, प्रदेश महामंत्री, भामसंघ, (2) श्री प्रदीप कुमार पाण्डे, प्रदेश उपाध्यक्ष, भामसंघ, (3) श्री देशराज, जिला अध्यक्ष, रांची, (4) श्री संजय चक्रवती, जिला मंत्री, रांची

12 अक्टूबर 2000 को आंगनबाड़ी सेविकाएँ एवं सहायिकाओं की भारतीय मजदूर संघ के साथ गुमला जिला के घाघरा प्रखण्ड में प्रथम बैठक में मंच पर श्री राजवंश सिंह एवं अन्य कार्यकर्त्ता तथा सभा को सम्बोधित करते श्री रामचन्द्र गोप ।

गढ़वा जिला टंडवा ग्राम की बीड़ी मजूदरों को भारतीय मजदूर संघ से सं0 झारखण्ड बीड़ी मजदूर संघ के कार्यकर्त्ता हैं। श्रमिक शिक्षा बोर्ड के प्रशिक्षण शिविर में ।

24–25 जून 03 को धनबाद में सम्पन्न अभ्यास वर्ग में विषय रखते हुए श्रीरामप्रकाश मिश्र जी एवं मंच पर

श्री महादेव सिंह, प्रदेश अध्यक्ष, श्री आदित्य साहू, प्रदेश महामंत्री, श्री रघुवंश नारायण सिंह, प्रदेश संगठन मंत्री, श्री वासुकीनाथ झा, प्रभारी एवं श्री पारस नाथ ओझा, प्रभारी

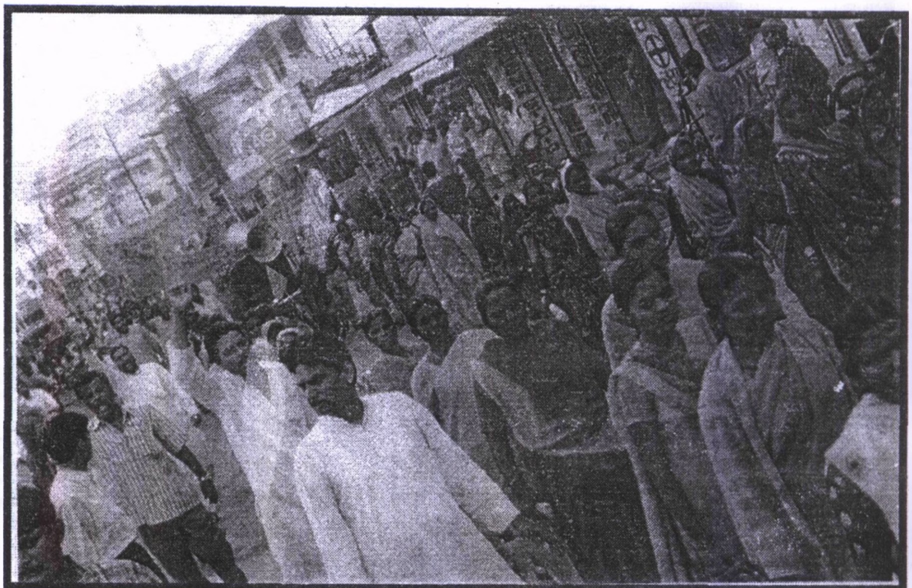

दिनांक 13 अगस्त 2004 को रांची सी0 सी0 एल0 मुख्यालय पर सी0 सी0 एल0 को कर्म संघ का प्रर्दशन ।

दिनांक 22 फरवरी 04 राँची में प्रांतिय प्रतिनिधि सभा में प्रतिनिधगण – इस कार्यक्रम में 11 वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं तथा 4 स्व0 कार्यकर्त्ताओं की पत्नियों को शॉल तथा प्रतीक चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया ।

13 अगस्त 04 को सी0सी0एल0 कोलियरी कर्मचारी संघ के प्रदर्शन का नेतृत्व करते हुए : **श्री बसंत कुमार सिंह, श्री वी0 के0 राय, श्री आदित्य साहू, श्री रामविनय त्रिपाठी ।**

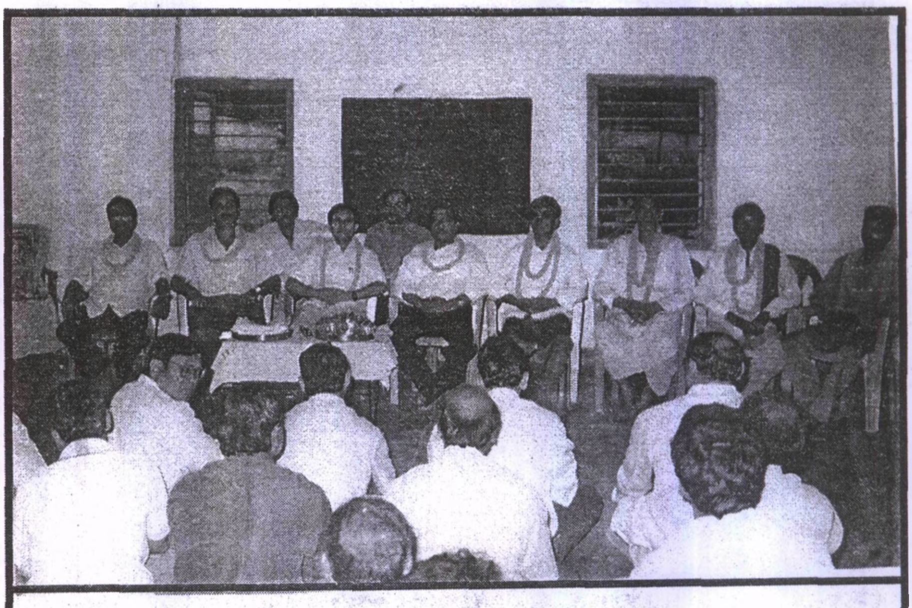

दिनांक 23 जुलाई 2004 को एन0 के0 क्षेत्र सी0 सी0 एल0 में वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं का सम्मान करते भारतीय मजदूर संघ कार्यकर्त्ता

झारखण्ड विड़ी मजदूर संघ (भामस) के द्वारा आयोजित श्रमिक शिक्षा बोर्ड के कार्यक्रम दिनांक 25 अगस्त से 28 अगस्त 04

श्रमिक शिक्षा बोर्ड के तहत प्रशिक्षार्थी
बीड़ी मजदूर बहनें

दिनांक 28.04.04 को गढ़वा जिला के टंडवा ग्राम में बीड़ी मजदूरों को भारतीय मजदूर संघ के प्रयास से परिचय–पत्र देते
1. श्री एस. बरूवा, मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, भवनाथपूर एवं अन्य पदाधिकारी, 2. श्री सीताराम सिंह, प्रभारी पलामू प्रमण्डल भारतीय मजदूर संघ, झारखण्ड प्रदेश, 3. श्री प्रदीप कुमार सिंह, जिला मंत्री, गढ़वा जिला

दिनांक 22 फरवरी 04 को रांची में प्रांतीय प्रतिनिधि सभा में मंचपर
1. डा0 वसंत कुमार राय 2. श्री महादेव सिंह, प्रदेश अध्यक्ष 3. श्री आदित्य साहू, प्रदेश महामंत्री

भारतीय मजदूर संघ, प्रथम अधिवेशन, जमशेदपुर दिनांक 15–16 फरवरी 03 में मंच पर
श्री ओमप्रकाश आधी, श्री रघुवंश नारायण सिंह, श्री रघुवर दास, श्रममंत्री झारखण्ड, श्री कु0 अर्जुन सिंह

अभ्यासवर्ग धनबाद में दिनांक 24–25 जून 03 को
श्री बासुकीनाथ झा, श्री रघुवंश नारायण सिंह, श्री महादेव सिंह, श्री रामप्रकाश मिश्र, श्री आदित्य साहू, श्री पारसनाथ ओझा

ONE PERCENT CUT IN EPF INTEREST IS UNETHICAL

Sri Baij Nath Rai National Secretary - BMS & member CBT EPF

The decision of congress - communist led UPA Govt. regarding reduction in the rate of interest on P. F. from 9.5% to 8.5% (i.e. one present) is unfair, unethical, unjustified and anti-labour. It may be recalled that under Common Minimum Programme (CMP), the policy statement of the present union government it is declared, "The UPA Government will never take decisions on the Employees Provident fund (E.P.F.) without consultation with and approval of the EPF Board." This policy debars UPA Govt. form taking any decision in the matter of E.P.F. which includes fixation of Rate of Interest. But the Government has taken this unilateral Discission of one present cut in the rate of Interest of PF without approval of EPF. All along EPF Board has always taken such discission on unanimous basis. This is the first time in the History of EPF that Mr. Sisram Ojha, Honorable Labour Minister Govt. of India and ex-officio chairman of EPF Board, has imposed the decision of Government on Board, ignoring the past practices. It is unfair to say that it is a majority decision of the Board. Be it known that there are 42 members in the EPF Board i.e. 10 from Trade unions, 10 from Employers and 22 from govt. officials of State and center. Thus this 22 govt. officials have nothing to say. They are only for obeying the decision of the Government. From the rest 20 members 12 have opposed. So how it is a majority decision. In this way this decision has violated the declared policy under C.M.P. of U.P.A. Govt. It is a laughing story that leftist are opposing such anti-policy Act of the Govt. through Print and Electronic media. Morality demands that they should have withdrawn their support from such anti labour UPA Govt. first and then they should say any thing. Recently Sri Sitaram Yechury the Polite beuro Member of CPI (M) commented on the alleged ill - practices of UPA Govt. in strong manner "when we bite very strongly and that is something I hope this Govt. does not want to learn the hard way" Now when the moment after moment (i. e. the issue of F. D. I. and this cut in rate of interest on P. F. etc.) are coming, the C.P.I. (M) leaders are only biting in Television and News Paper.

Now let us see-what is the inside story. There has been consecutive four meetings of E.P.F. Board on the issue. In the first meeting held on 30th June all the left Trade unions said that they were ready to negotiate the rate of interest from the present rate of 9.5% to the maximum of 12% but in the latter meetings held on 13th July, 20th July and

finally on 9th August '04 they bowed down heavily and eagerly requested the minister for continuing the present rate of interest of 9.5% at least. They desired a delegation to meet Finance and Prime Minister which was also denied. Congress Lad INTUC was all along ready to accept the Govt. proposal of 8% rate of interest by playing the music of Govt "what we earn we should spent that only."

It is B.M.S. only which put a bold demand of 12% rate of Interest on the basis statistics based on available documents placed by the Govt. officials. Now let us see how this rate is fixed.

Para 60 of O.P.F. Act 1952 deals with the issue of INTEREST which runs as follows:-

Para 60 INTEREST - (I) The commissioner shall credit to the account of each member Interest of such rate as may be determined by the central Government in consultation with the Central Board.

Para 60 (ii) & (iii) - Are not relevant for determination of Interest.

Para 60 (iv) - In determining the rate of Interest, the Central Government shall satisfy itself that there is no overdrawal on the Interest Suspense Account as a result of the debit there to the account of members.

Thus the main Ingredients of this provision of law are:-

i) The base of calculation is INTEREST SUSPENSE ACCOUNT

ii) There should be no overdrawal on the Interest suspense account.

It may be noted that

There is no mention of any particular year for the purpose of taking into consideration the said Interest suspense Account which used to accumulating years after years as shown in the balance sheets.

The Audited Account for 2002 - 03 has been placed on the Board in which Rs. 8313.24 cr. has been shown as INTEREST SUSPENSE ACCOUNT. If this amount is taken into consideration for fixation of rate of Interest as per law then 11.50%. Interest can easily be fixed which needs Rs. 8287.95 only. But this was disputed on the plea that this Amount contains income from other sources than Interest earning on Investment.

This argument is not tenable under law. Firstly because there is no such provision in the law and secondly that any Income, what ever in nature,- comes or earned that will be practically for workers only. No one else is entitled to get the same. However let us examine the argument of B.M.S.

In all the aforesaid meetings it is B.M.S. who placed statical papers in support of 12% rate of interest. In the last meeting on 9th August '04 the paper of B.M.S. in brief was as follows :-

Incomes - (In crores)

i) 5919.42 - Estimated Interest earning as shown in official document.

ii) 122.23 - 2% contingencies Amount.

iii) 59.97 - Interest on SRF

Total 6101.62 cr............................A

Our Average Surplus if Interest per year is Rs. 288 cr.

<u>If we take 10 years surplus only</u> - it is Rs. 2880.00 cr................B

Now adding A+B = 6101.62 + 2880.00 equal to Rs. 8981 crore.

For 12% rate of Interest our requirement is 8648 crore only. Thus balance Surplus will be 8981 -8648 = 330 crore. So Rs. 330 crore remain Surplus if 12% rate of Interest is fixed.

It maybe noted that as per law (As mentioned above in para 60 (i) & (iv) there is no bar in taking any amount from earned surplus. So 10 years average surplus of Rs. 2880.00cr. (as mentioned) can be easily taken. Because it is the Earned Income on Investments.

The argument that capital would be liquidated is absolutely vague. As because P.F. Investment (as shown in last year) is Rs. 1.5 lakh crores. Having so much money how is the question of liquidation of capital amount arise.

Respected chairman and Honorable Labour Minister Sri Sisram O/s at the time of declaration of Rate of Interest as 8.5% on 9th August, argued that there would be a deficit of Rs. 206 crores on the said rate of Interest 80% of the P.F. Invested amount of

Rs. 1.5 Lakh crore is lying under Government securities. Government is borrower and workers are lender. Perhaps on this ground only, UPA Government in its. C.M.P. accepted the EPF board as supreme authority as mentioned above. There is no question of deficit. It is not at all convincing.

The aforesaid statistics of B.M.S. should have been examined before any such declaration. It was woven the demand of the house that the papers placed by BMS should be examined. But it is most unfortunate that such demand of the house was ignored by respected chairman.

Under the above facts and circumstances, the said decision of union Government is Unfair because the submitted documents of B.M.S. was Ignored, Unethical because it is against the declared policy of UPA Government as per their Common Minimum program (CMP), Unjustified because it was based only on the official recommendations without application of judicious mid and it against the workers because their right to get interest on total earnings was not allowed. It is to be noted that there is not provision ion the law for fiction of Interim rate of Interest.

It is also unfortunate that Finance Minister has not yet approved the Audited Account of EPF for the last 2 consecutive years i.e. 2001-02 and 2002-03. What is the guarantee this years Account would be approved by them when the deficit of Rs. 206 cr has been declared by the chairman himself.

It is not worthy that is the inflated market the real value of present declared rate of 8.5% would be more less.

However in spite of all the aforesaid discussions, One thing is crystal clear that the "ACCOUNT OF EPF IS FULLY CORRECT." There is no room for any doubt or ambiguity. The only issue of differences is the method of calculations for determining the Rate of Interest. It is also note worthy that due to aforesaid wrong method of calculation by the union Government, the workers are going to loose Rs. 720.69 crores for said one percent cut. in the ensuing year to be effected from 1st April 2004.

No genuine Trade Union can tolerate such a big loss of workers in such manner. Therefore BMS has no alternative but to oppose the said whimsical, unjustified and ant-labour discission of Government by tooth and nail. The Protest Realty or BMS at Delhi on 20th Sept. 2004 is one of such action. More agitationed programme through out county would follow in case the said decision was not rolled back by union Govt. of India.